



हिमज्योति

सितम्बर 2015

अंक-पंचम



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
उत्तराखण्ड, देहरादून



हिमज्योति

सितम्बर 2015

अंक-पंचम

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
उत्तराखण्ड, देहरादून





सत्यमेव जयते

अशोक सिन्हा
महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड

संदेश

हमारे कार्यालय की वार्षिक पत्रिका "हिमज्योति" का पंचम अंक आपके कर कमलों में अर्पित करते हुए मुझे विशेष हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा हिंदी को समर्पित हमारी पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता केवल हिंदी पखवाड़े तक सीमित नहीं होनी चाहिए बल्कि हमें हिंदी के प्रति स्वयं को उत्साहपूर्वक समर्पित करना होगा। हिंदी का शीर्ष स्थान तभी सम्भव है जब हम अपने दैनिक कार्यालयी कार्यों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें। इससे निश्चित ही हिंदी सम्पर्क भाषा के रूप में सम्पूर्ण भारत में विद्यमान हो जायेगी, जो हमारी राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखेगी।

मैं पत्रिका के संपादक मण्डल एवं समस्त रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिनके अथक परिश्रम एवं लगन के परिणामस्वरूप यह कार्य समयबद्ध ढंग से पूरा हो सका। सुविज्ञ पाठकों के बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत है, जिनके मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से हम इस पत्रिका को और अधिक रुचिकर एवं सुंदर रूप देने में सफल होंगे, ऐसा मेरा मानना है।

अ. सिन्हा

संरक्षक एवं निदेशक

पत्रिका परिवार

संरक्षक एवं निदेशक	:	श्री अशोक सिन्हा महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
प्रधान संपादक	:	श्री पुरुषोत्तम दास वरि० उप महालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)
सम्पादक	:	श्री महेश कुमार बत्रा उप महालेखाकार (निधि)
सलाहकार संपादक	:	श्री विनोद कुमार शर्मा वरिष्ठ लेखाधिकारी
सहायक संपादक	:	श्री भास्करानन्द त्रिपाठी सहायक लेखाधिकारी श्री सुशील देवली सहायक लेखाधिकारी
	:	श्री महावीर सिंह रावत सहायक लेखाधिकारी
	:	श्री गणेश प्रसाद सहायक लेखाधिकारी
आवरण पृष्ठ: सूर्योदय—चकराता, देहरादून	:	श्री गणेश प्रसाद
पार्श्व पृष्ठ: सूर्योदय—सहस्रधारा, देहरादून	:	सहायक लेखाधिकारी
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा

रचनाकारों के विचारों से संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

‘हिमज्योति परिवार’



(बैठे हुए—बायें से दायें)—श्री पुरुषोत्तम दास, वरि० उप महालेखाकार (प्रशा० एवं लेखा)—प्रधान संपादक, श्री अशोक सिन्हा, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—संरक्षक एवं निदेशक तथा श्री महेश कुमार बत्रा, उप महालेखाकार (निधि)—संपादक

(खड़े हुए—बायें से दायें)—श्री गणेश प्रसाद, सहा० लेखाधिकारी—सहायक संपादक, श्री सुशील देवली, सहा० लेखाधिकारी—सहायक संपादक, श्री महावीर सिंह, सहा० लेखाधिकारी—सहायक संपादक, श्री वी० के० शर्मा, वरि० लेखाधिकारी—सलाहकार सम्पादक तथा श्री भास्करानन्द त्रिपाठी, सहा० लेखाधिकारी—सहायक संपादक





सत्यमेव जयते

पुरुषोत्तम दास
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन एवं लेखा)

प्रधान संपादक की कलम से

हमारे लिए गौरव का विषय है कि 'हिमज्योति' पत्रिका का पंचम अंक आपके कर कमलों में प्रस्तुत है। राजभाषा हिंदी को समर्पित हिमज्योति पत्रिका हिंदी के सतत् उत्थान के मार्ग पर अग्रसर है। हम सबका नैतिक दायित्व बनता है कि हम अपने दैनिक शासकीय कार्यों के निष्पादन में अधिकाधिक राजभाषा हिंदी को प्रयोग में लायें। हिंदी भारतीय जीवन मूल्यों की अनमोल धरोहर है। इस धरोहर के प्रति हमारा संवैधानिक दायित्व और कर्तव्य बनता है कि राजभाषा हिंदी हम सब भारतवासियों की "राष्ट्रभाषा" के सिंहासन पर प्रस्थापित हो, तभी सही मायनों में हम कह सकते हैं कि हम भारतीय हैं और हमारी एक राष्ट्रभाषा है।

हिंदी का किसी भारतीय भाषा जो कि हमारी अंतरात्मा में रची बसी है, के प्रति कोई विरोध नहीं है, बल्कि यह हमारी सम्पर्क भाषा का एक सरल व सुबोध माध्यम है जो हमें भारतीय होने का गौरव प्रदान करती है। मैं आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास करता हूँ कि हमारे अधिकारी व कर्मचारीगण हिंदी के प्रति समर्पण भाव से कार्य करेंगे।

प्रधान सम्पादक



सत्यमेव जयते

महेश कुमार बत्रा
उप महालेखाकार
(निधि)

संपादकीय

यह हमारे लिए हर्ष का विषय है कि हिमज्योति पत्रिका का पंचम अंक अपने सुधी पाठकों को समर्पित कर रहे हैं। पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही है। हमें खुशी है कि भारत बहुभाषी राष्ट्र होते हुए भी हिंदी को अपनाने में किसी प्रकार की हिचक नहीं रखता है। हिंदी हमारी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक एकता को प्रदर्शित करते हुए अपनी विकास यात्रा पर सतत अग्रसर है।

वर्षों की गुलामी के बंधनों को तोड़कर 15 अगस्त 1947 को राष्ट्र ने आजादी में सांस ली। यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि 14 सितम्बर 1949 को हिंदी संघ की राजभाषा के पद पर आसीन हुई। उस दिन हमारे देशवासियों ने संकल्प लिया था कि हमारा हर शासकीय कार्य हिंदी में किया जायेगा। परंतु यह अत्यंत चिंता का विषय भी है कि इतने वर्षों बाद भी हम अपनी राजभाषा हिंदी को वह स्थान दिलाने में सफल नहीं हो सके, जिसकी वह वास्तव में हकदार है।

हमें यह दृढ़ संकल्प लेना होगा कि हिंदी को राजभाषा के पद पर और अधिक गौरव प्रदान करने हेतु अपने दैनिक शासकीय कार्यों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें। हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो जन मानस को आपस में जोड़ने में सक्षम है।

मैं अपने सहृदय पाठकों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ कि आपके प्रशंसा पत्रों ने हमारे रचनाकारों में नई ऊर्जा का सृजन किया है। यही ऊर्जा राजभाषा हिंदी के विकास में अग्रणी भूमिका निभाएगी, ऐसा मुझे विश्वास है। राजभाषा के चहुमुखी विकास के लिए हम अपने सुधी पाठकों के सुझाव तथा मार्गदर्शन का सदा स्वागत करते हैं।

महेश
संपादक



‘खामोशी’

चित्रकार—गणेश प्रसाद, सहा० लेखाधिकारी

गत वर्ष प्रकाशित ‘हिमज्योति’ के चतुर्थ संस्करण के लिए हमें उत्साहवर्द्धक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं। प्राप्त प्रतिक्रियाओं में से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है, जोकि हमें ‘हिमज्योति’ के इस संस्करण के लिए और अधिक प्रयास करने और गुणवत्ता में सुधार हेतु प्रेरणा एवं विश्वास देती हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक पूर्व की अपेक्षा और अधिक रुचिकर सिद्ध होगा तथा आप इस अंक के सम्बंध में अपने अमूल्य सुझाव/प्रतिक्रियाओं से हमें पूर्ववत् अवगत कराएंगे। आपकी प्रतिक्रियाएं हमारे लिए पुरस्कार के समान हैं।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका “हिमज्योति” के चतुर्थ अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। मुख पृष्ठ अत्यंत मोहक है, इसकी आंतरित साज सज्जा और पृष्ठों की गुणवत्ता अच्छी है।

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख एवं रचनाएँ सृजनात्मकता से ओत-प्रोत हैं। विशेषकर श्री विनोद कुमार शर्मा जी की कविता “इंसानियत”, सुश्री बबीता जी की कविता “एहसास”, सुश्री दीपा पंवार जी द्वारा लिखित “ममता की छांव”, श्री भास्करानन्द त्रिपाठी जी की “अनहद नाद”, श्री अशोक चौधरी जी की कविता “बेटी”, सुश्री राधा राणा जी की कविता “नारी” और श्री इफ्तेखार अहमद की कविता “सोचा कभी नहीं” सराहनीय है।

संपादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी अधिकारी,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक—हिंदी अनुभाग/गृह पत्रिका/‘हिमज्योति’/ 2014—15/125 दिनांक 20.11.14, द्वारा हिंदी पत्रिका ‘हिमज्योति’ के चतुर्थ अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ अच्छी, प्रभावी सारगर्भित व पठनीय हैं। पत्रिका की साज—सज्जा व आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री अजय कुमार पाल की कविता “हिमज्योति”, सुश्री किरन की कहानी “लाडली” एवं श्री महावीर सिंह रावत की कविता “सोने की चिड़ियाँ” के साथ—साथ अन्य संकलन एवं कविताएँ भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनायें।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष),

महालेखाकार (ले० एवं हक०) का कार्यालय, बिहार, पटना

महोदय,

आपकी पत्रिका ‘हिमज्योति’ की प्रति प्राप्त हुई। पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हुई। पत्रिका सम्पूर्णतः उत्तम कोटि की है। सभी रचनाएँ भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगी। विशेष रूप से श्री महावीर सिंह रावत की रचना “नंदा राजजात पर्व का महत्व”, श्री विनोद शर्मा की “इंसानियत”, सुश्री दीपा पवार की “ममता की छाँव”, श्रीमती किरण की “लाडली”, श्री भास्करानंद त्रिपाठी की “अनहद नाद”, श्री ब्रजेश कुमार की “महापर्व छठ पूजा” अवर्णनीय हैं। आशा है भविष्य में भी आपकी पत्रिका हमारा ज्ञानवर्धन करती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका “हिमज्योति” का चतुर्थ अंक पत्र संख्या हि0अ/गृ0प0/हिमज्योति/2014-15/125 दिनांक 20.11.2014 प्राप्त हुआ।

पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएँ अत्यंत शिक्षाप्रद, नीतिपरक एवं रोचक हैं। ये सभी रचनाएँ अत्यंत सराहनीय और प्रासंगिक भी हैं।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

वरि0 लेखापरीक्षा अधि0/राजभाषा,
भारतीय लेखा एवं लेखा-परीक्षा विभाग
महानिदेशक, लेखा-परीक्षा का कार्यालय,
केंद्रीय, कोलकाता

महोदय,

हिंदी गृह पत्रिका “हिमज्योति” के चतुर्थ अंक की प्राप्ति हुई। इस हेतु हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ हिमालय की सौम्य वादियों की मनमोहक खुशबू से आनंद की दिव्य अनुभूति प्रदान कर रहा है। “विहंगम उत्तराखण्ड” चित्रकार-गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी की कृति मन में कलात्मक भाव जागृत करने का अनूठा प्रयास है, जिसकी सराहना सूरज को दीपक दिखाने जैसा होगा। पत्रिका में शामिल रचनाएं प्रकृति के प्रति मानव के दृष्टिकोण शाश्वत बनाने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करती हैं। ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं राजभाषा के प्रति अनन्य स्नेह व लगाव पैदा करने वाली रचनाओं से समृद्ध अंक अतुलनीय है।

पत्रिका में शामिल छायाचित्र अच्छे हैं। रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को बधाई

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.....

(डॉ० दिनेश सिंह)

हिंदी अधिकारी,

राजभाषा अनुभाग, भारतीय लेखा एवं लेखा-परीक्षा विभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा) राजस्थान, जनपथ, जयपुर-302005

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित पत्रिका ‘हिमज्योति’ का चतुर्थ अंक, इस कार्यालय में प्राप्त हो गया है। पत्रिका का मुद्रण व कलेवर उत्कृष्ट श्रेणी का है। पत्रिका में छपे लेख, कविताएं व कहानी उच्च कोटि की हैं। पत्रिका में विभिन्न पृष्ठों पर उत्तराखण्ड के प्राकृतिक दृश्यों ने अभिभूत कर दिया। सुशील देवली की गजल व कविता, भास्करानन्द त्रिपाठी का लेख ‘अनहद नाद’, संजय रैणा की कविता ‘खून पसीना’ अच्छी बन पड़ी हैं। ‘लाडली’ नाम की कहानी सोचने को मजबूर करती है।

पत्रिका के कुशल संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाइयां! पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

लेखाधिकारी/हिंदी अनुभाग,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका के चतुर्थ अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई। पत्रिका की रूप सज्जा तथा रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रति आपकी सक्रियता व राजभाषा निष्ठा की परिचायक है। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा तथा उत्साह का संचार होगा। पत्रिका में प्रकाशित श्री महावीर सिंह रावत का लेख "नंदा राजजात पर्व का महत्व" एवं श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख "स्वच्छता की आवश्यकता" ज्ञानवर्धक हैं। श्री अशोक सिंह चौधरी की कविता "आभास" एवं श्री रामवीर सिंह की कविता "संवेदना" भावपूर्ण हैं।

पत्रिका के सफल आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं एवं बधाई। सादर।

प्रधान संपादक वीरांगना
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी वार्षिक पत्रिका हिमज्योति का चतुर्थ अंक की प्रति प्राप्त हुई तदहेतु धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित लेख कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

(अलोक कुमार राय)
लेखा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय वरिष्ठ उपमहालेखाकार (ले० एवं हक०), सिविकम, लेखा परीक्षा भवन, देवराली, तादोड, गान्तोक

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृहपत्रिका हिमज्योति के चतुर्थ अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। इस पत्रिका में समाहित सभी रचनायें सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं।

श्री विनोद कुमार शर्मा की कविता इंसानियत, श्री महावीर सिंह रावत की कविता कारगिल फतह, श्रीमती किरन की कहानी लाडली, श्री भास्करानन्द त्रिपाठी का लेख अनहद नाद एवं सुश्री राधा राणा की रचना नारी विशेष सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादन मण्डल को बधाई व पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(हरीश चंद्र माखीजा)
हिंदी अधिकारी राजभाषा कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०) राजस्थान

महोदय,

आपके पत्र सं० हि०अ०/गृह पत्रिका/हिमज्योति/2014-15/125 दिनांक 20.11.14 द्वारा प्रेषित गृह पत्रिका हिमज्योति की चतुर्थ वॉ अंक की प्राप्ति हुई।

पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ/कवितायें रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं, शुभकामनाओं के साथ।

स०ले०प०अ०/हिंदी प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका “हिमज्योति” के चतुर्थ अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका के आवरण के साथ साथ पृष्ठों की भी साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। इस अंक में समाविष्ट सभी रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्रीमती शालू जाटव की कविता “जिंदगी के रूप”, श्री अशोक सिंह चौधरी की कविता “दोस्ती का सफर”, श्रीमती दीपा पंवार का लेख “ममता की छाँव”, श्री भास्करानन्द त्रिपाठी का लेख “अनहद नाद”, श्रीमती राधा राणा की कविता “नारी” एवं श्री रामबीर सिंह की कविता “संवेदना” अत्यंत सराहनीय हैं। हिंदी सप्ताह समारोह-2013 की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक झलकियाँ तथा प्रकाशित अन्य सभी छायाचित्र भी बहुत अच्छी लगी।

पत्रिका के उत्तम सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादन मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(आनन्द कुमार पाण्डेय)

सहायक लेखा अधिकारी/प्रशा० हिंदी सेल
एवं संपादक “वंदे मातरम्” भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), पश्चिम बंगाल

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका ‘हिमज्योति’ का चतुर्थ अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का आवरण बहुत ही आकर्षक है। इस पत्रिका की साज सज्जा उच्चकोटि की है। श्रीमती किरन की कहानी ‘लाडली’ बहुत हृदयस्पर्शी है। श्री भास्करानंद त्रिपाठी का लेख ‘अनहद नाद’ बहुत ही जानकारीवर्धक एवं विचारोत्तेजक हैं। श्री अजय कुमार पाल की कविता ‘हमारी प्रिय पत्रिका : हिमज्योति’, विनोद कुमार शर्मा की कविता ‘इंसानियत’, एस०एस० तोमर की कविता ‘पहचान’, श्री विक्रांत कुमार की कविता ‘जीवन और अभिमान’ बहुत ही भावप्रवण बन पड़ी हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ।

हिंदी अधिकारी (हिंदी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब एवं यू०टी०, चण्डीगढ़ सैक्टर 17, चण्डीगढ़-160017

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका “हिमज्योति” के चतुर्थ अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का कलेवर अपनी भव्यता लिए हुए है। छायाचित्रों ने इसे और भी मनोरम बना दिया है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेषकर श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख “स्वच्छता की आवश्यकता”, श्रीमती किरन की कहानी “लाडली”, श्री महावीर सिंह रावत की कविता “कारगिल फतह” एवं श्री आशोक सिंह चौधरी की कविता “बेटी” आदि विशेष प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादन मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
राजभाषा अनुभाग,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान, जनपथ, जयपुर-302005

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'हिमज्योति' के चतुर्थ अंक की एक प्रति प्राप्त हुई है।

पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक, रोचक एवं शिक्षाप्रद है। विशेषकर श्री सुशील देवली की कविता 'गृह प्रवेश', श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख 'स्वच्छता की आवश्यकता', श्री दीपक कुमार का लेख 'ममता की छाँव', सुश्री किरन का लेख 'तारीफ बनाम चाटुकारिता' अत्यंत सराहनीय हैं। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)
ओड़िशा, भुवनेश्वर



अनुक्रमणिका

विधा	क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
कविता		श्रद्धांजलि	भास्करानन्द त्रिपाठी	1
कविता		उड़ान	शिवांगी	2
कविता		अन्नदाता	महावीर सिंह रावत	3
लेख		आज की सशक्त महिलाएं	दीपा पवार	4
कविता		स्वार्थी	प्रशांत जोशी	6
लेख		हॉस्टल का जीवन—यापन	राजू	7
कविता		घर के दानव	बबीता	11
लेख		राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा	भास्करानन्द त्रिपाठी	12
ग़ज़ल		ग़ज़ल	सुशील देवली	14
लेख		आर्थिक विकास बनाम प्राकृतिक आपदाएं	रेखा	15
कविता		जीवन चक्र	रामबीर सिंह	17
कहानी		समझ से परे	ओम प्रकाश	18
लेख		सूचना अनुरोध पत्रों का निस्तारण	विनोद कुमार शर्मा	20
कविता		साधना	प्रवीन कुमार मिश्रा	22
कविता		जगतगुरु की माया	प्रशांत जोशी	25
कहानी		छड़ी	संजय कुमार रैणा	26
कविता		इंटरनेट	प्रशांत कुमार	30
लेख		जौनसार बावर —एक संक्षिप्त परिचय	एस० एस० तोमर	31
ग़ज़ल		ग़ज़ल	सुशील देवली	34
कविता		हिम्मत	दीपा पवार	37
लेख		व्याघ्रेश्वर का महत्व	महावीर सिंह रावत	38
कविता		चलो परी अब घर चलें	राकेश रंजन मिश्रा	40
लेख		जौनसार बावर—धार्मिक पर्यटन स्थल	एस० एस० तोमर	41
कविता		धन पशु	भास्करानन्द त्रिपाठी	44
कहानी		खुशी	दीपा पवार	45
कविता		थक गया हूँ मैं	चन्दन कुमार मिश्रा	49
संस्मरण		अजब तेरी लीला गजब तेरी माया	रामबीर सिंह	50
लेख		सरकारी तंत्र में कम्प्यूटरीकरण —एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	प्रवीन कुमार मिश्रा	52
व्यंग्य		ब्रेकिंग न्यूज़	गणेश प्रसाद	55
सूची		हिंदी सप्ताह—2014 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत प्रतिभागियों का संक्षिप्त विवरण	हिंदी अनुभाग	58
सूची		उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाण पत्र तथा नकद पुरस्कार पाने वाले प्रतिभागियों का संक्षिप्त विवरण	प्रशासन—1 अनुभाग	59
संकलन		कार्यालय की विभिन्न खेलकूद क्रीड़ाओं एवं गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण	कल्याण अनुभाग	60
सूची		वर्ष 2014—15 शैक्षिक सत्र दौरान हाईस्कूल/ इंटरमीडिएट परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का संक्षिप्त विवरण	पत्रिका प्रकोष्ठ	62
संकलन		अंग्रेजी शब्दों के सरल एवं उपयुक्त हिंदी शब्द	विनोद कुमार शर्मा	63
संकलन		कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र	गणेश प्रसाद	65

श्रद्धांजलि (एक कर्मयोगी को)



(15.10.1931–27.07.2015)

श्रद्धेय, कलाम !
कितने ऊँचे उठ गये हैं आप,
उस आसमाँ की तरह..... ।
क्या, अब भी छूँ सकोगे
भारत के उस बचपन को,
तेजस्वी मन को.....
जो उग रहा है, धरा पर
हरी-भरी घास की तरह ।
निहारते हैं वे आज भी,
उस निस्तब्ध आसमाँ को
ढूँढते हैं, तुम्हें वे
स्मृति की अतल गहराई में
प्रेरणा की कुछ बूंदें पाने के लिए.....
संघर्षमय इस जीवन में.....
अपना अस्तित्व बचाने के लिए ।
फिर बताओ ना.....?
कौन, प्रेरित करेगा उन्हें,
पंख फैलाने के लिए.....
बुझे दीप जलाने के लिए ।
तरुण भारत का
वही तेजस्वी मन,
अर्पित करता है तुमको
अश्रु पूर्ण, श्रद्धा सुमन
श्रद्धा सुमन ।

भास्करानन्द त्रिपाठी
सहायक लेखाधिकारी



उड़ान



शिवाँगी
बहुकार्यकर्मी

नव युग का यही है फरमान।
बेटियाँ आकाश में भरना चाहती हैं उड़ान।
परंतु उनके पंखों पर बांध दिये हैं परंपराओं के बंधन
ताकि वे भर न सकें उड़ान, और छू न लें आसमान।
बेटियों की छोटी-छोटी आँखें
देखती हैं बड़े-बड़े स्वप्न
वे देखती हैं आसमान में,
और नापती हैं उसकी ऊँचाइयों को
जन्म लेते ही परिवार में
हो जाता है शुरू, बेटियों का संघर्ष
और होती हैं ज्यों-ज्यों बड़ी
उनके संघर्षों का दायरा बढ़ता जाता है।
बेटियाँ लहराने लगी हैं तमाम क्षेत्रों में
अपनी सफलताओं के ध्वज,
गाँवों-कस्बों नगरों-महानगरों की बेटियों का यही है अरमान
वे अब छू ही लेंगी आसमान।



“मौन और एकांत, आत्मा के सर्वोत्तम मित्र हैं।”

— आचार्य विनोबा भावे

अन्नदाता



महावीर सिंह रावत
सहायक लेखाधिकारी

हे अन्नदाता, हे अन्नदाता
अजीब तेरी यह कहानी
जीवन तेरा संघर्ष में गुजरे
कभी सूखा तो, कभी खूब बरसे पानी।

ये कहानी आज की नहीं
ये कहानी सदियों पुरानी
जख्मों से भरी देह तेरी
कभी तूने हार न मानी।

कल तक जिसने तुझे भुलाया
आज वे तुझे भुना रहे
नूरानी वक्त तेरी मौत में देख
नैकख्याह का सपना संजो रहे।

तू नेकदिल, क्यों इतना भोला बना
माजी का चश्मदीद तू रहा
बेमुरब्बत के आगे खुदकशी से
क्यों अपने वजूद को मिटा रहा।

धरा का सीना चीर तूने
भर दिया अन्न का भण्डार
जब कंगाली से वतन गुजरा
तू बना हरित क्रांति का आधार।

भूखे पेट को भरपेट भोजन कराया
सड़े अन्न से दिया तूने छुटकारा
मौसम की मार से क्यों व्यथित होता
भरे अन्न के भण्डार से, कर तू भी गुजारा।

बल तेरे बाजू में, हौसला सीने में
पांवों से तेरे ये धरा थर्राये
तेरे तन के पसीने की बूंदों से
इस धरा में सोना उग आये।

हिम्मत से काम ले, जज्बाती मत बन
सूली पर मत चढ़, मत त्याग ये तन
हे मेरे अन्नदाता हे मेरे अन्नदाता, तू ले प्रण
जीवन अनमोल है, आत्महत्या का न कर वरण।



आज की सशक्त महिलाएं



दीपा पंवार

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुबह ऑफिस जाते वक्त बाइक पर सवार धुंआ उड़ाती एक लड़की को देखा, आत्मविश्वास से भरपूर, उत्साह से लबरेज, चेहरे पर गजब की चमक। देखकर मानो दिन बन गया। उसकी तारीफ में कुछ कहने से खुद को रोक नहीं पाई। मुंह से शब्द फूटे ही थे कि टाटा मैजिक में मेरे साथ सवार ऑफिस कुलीग्स को डिस्कशन के लिए एक टॉपिक मिल गया। फिर क्या था, बातचीत शुरू हो गई। एक के बाद एक महिलाओं की उपलब्धियों के किस्से सुनाए जाने लगे। पुरुष साथियों के मुंह से ये किस्से मुझे गर्मी में बारिश जैसी ठंडक का एहसास करा रहे थे।

किसी ने कहा, चंद वर्षों में महिलाओं ने खुद को साबित करके दिखाया है। वे हर क्षेत्र में अपनी क्षमता का लोहा मनवा रही हैं। किसी ने कहा, उनका त्याग बहुत बड़ा है, घर और ऑफिस दोनों संभालती हैं। खुद भी आत्मविश्वासी हैं और बच्चों को भी स्वतंत्र व आत्मनिर्भर बनाना चाहती हैं। किसी ने कहा कि आज की नारी की सोच सकारात्मक है। वह जिंदगी को रसोई से बाहर रखकर भी देखती है। बेहद बिजी शेड्यूल में वह खुद की सेहत, खूबसूरती और मनोरंजन से भी कोई समझौता नहीं



करती। एक साथी ने एक ऐसी अधेड़ महिला के बारे में बताया जो अक्सर मूवी देखने अकेले सिनेमा हॉल जाती है। मतलब साफ है कि औरत आज किसी पर निर्भर नहीं है, न भावनात्मक रूप से, न आर्थिक रूप से और न ही सामाजिक रूप से। उसकी जिंदगी पर सिर्फ उसी का नियंत्रण है। एक हद तक वह इससे खुश भी है।

डिस्कशन को सुनकर खुशी हुई कि औरत की उपलब्धियों को लोग सकारात्मक तरीके से लेते हैं; हो सकता है मेरा ये आंकलन चंद पढ़े-लिखे पुरुष वर्ग तक ही सीमित हो, लेकिन बूंद-बूंद से ही सागर बनता है। शुरुआत होना जरूरी है और शायद बदलाव की शुरुआत हो चुकी है। बातों-बातों में ऑफिस कब आ गया, पता ही नहीं चला।

दिन की शुरुआत अच्छी हुई थी, लिहाजा मेरे चेहरे पर मुस्कान बनी हुई थी। सीट का काम भी बढ़िया हो रहा था। काम निपटा कर मोबाइल चेक किया, तो वाट्सएप में कुछ मैसेज दिखाई दिए। एक मैसेज

रिश्ते की एक भाभी का था। हाल-चाल पूछकर उन्होंने बात की शुरुआत की। बातों का सिलसिला आगे बढ़ा, तो पता चला कि उनकी बहन की जिंदगी शादी के बाद से नर्क बनी हुई है। पहली बेटी के जन्म पर तो जैसे-तैसे ससुराल वालों ने बक्श दिया था। अब दूसरी बेटी के जन्म पर उसकी जान लेने पर तुले हैं। शराबी पति मारपीट तो करता ही है, बच्चों के सामने गाली-गलौज भी करता है। दो कमरों के मकान में एक कमरा किराए पर दिया हुआ है, ताकि पेट भरता रहे। किसी तरह सास, ससुर के साथ एक कमरे में गुजारा कर रही है। कभी-कभी तो किराए के पैसे भी खुद हड़प कर जाता है। पत्नी और बच्चों को पाई-पाई के लिए तरसा देता है। कोई काम नहीं करता, इसलिए बड़ी बेटी स्कूल तक नहीं जा पा रही है। दिल्ली जैसे शहर में रहने और पढ़े लिखे होने के बावजूद वह लड़का उस लड़की और उसके बच्चों के साथ जानवरों जैसा व्यवहार करता है। लड़की इतनी पढ़ी-लिखी है, कि नौकरी कर सके, पर कलह कौन करे। पति के डर से सब चुपचाप सहती रहती है। महीनों वह मायके वालों से मिलना तो दूर, बात तक नहीं कर पाती।

सब सुनकर दंग रह गई मैं। वह इतना सब कैसे और क्यों सह रही है ? ऐसी भी क्या मजबूरी है। आप लोग कुछ करते क्यों नहीं। मेरी आवाज में दुख और गुस्से के भाव एकसाथ आ गए। इस पर भाभी बोलीं, हमने उसे घर आने को कहा, तो बोलती है कि मैं 'इनके' बिना नहीं रह सकती। जैसे भी हैं, पति हैं। ब्याहकर लाए हैं, अब जिंदगी इन्हीं के साथ कटेगी, चाहे हंसकर, चाहे रो कर।

सब सुनकर मैं अवाक् रह गई। सुबह जो देखा-सुना, वह सच था या जो अब सुन रही हूं वह। तय करना मुश्किल हो रहा था।



“चापलूसी का जहरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुँचा सकता जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझ कर पी न जाए।”

— मुंशी प्रेमचंद

स्वार्थी



प्रशान्त जोशी
बहुकार्यकर्मी

प्रकृति की, सुंदरता खो सी गयी।
शहरों की, स्वच्छ हवायें दूषित सी हो गयीं।।
सभी पेड़-पौधे, जंगल कट गये।
हम अपने में क्यों सिमट गये।।
इंसान जंगलो, के बीच बस गये।
जीव जन्तु, भोजन को तरस गये।।
वन पेड़-पौधों, से वीरान हैं।
हम अपने, कृत्यों से कहाँ हैरान हैं।।
वह शहरों में, आने को मजबूर है।
उसके आतंक, का चारों तरफ शोर है।।
मनुष्य प्रकृति, को नुकसान पहुचायेगा।
उसी को, त्रासदियों का जिम्मेदार ठहरायेगा।।
प्रकृति कब, तक सह पायेगी।
एक ऐसी, त्रासदी आयेगी।।
धीरे-धीरे, दुनिया सिमटती जायेगी।
इंसान को, गलती अपनी फिर नजर आयेगी।।



“प्रलय होने पर समुद्र भी अपनी मर्यादा को छोड़ देते हैं लेकिन सज्जन लोग महाविपत्ति में भी मर्यादा को नहीं छोड़ते।”

— चाणक्य

हॉस्टल का जीवनयापन



राजू

बहुकार्यकर्मी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

जब मैं छोटा था तो हमेशा सोचा करता था कि मैं भी कभी हॉस्टल में रहूँ वहाँ का जीवन देखूँ। न कोई बंधन न कोई रोक-टोक बस मजे ही मजे। स्कूल, कॉलेज सब करने के बाद भी मुझे ऐसा मौका नहीं मिला। लेकिन जैसे ही मैं कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड, देहरादून में आया तो मुझे हॉस्टल में रहने का आत्मसुख प्राप्त हुआ। जब मैं देहरादून में आया तो यहाँ के रहन-सहन से वाकिफ नहीं था और सबसे बड़ी बात यह थी कि रात को रुकने का कोई परिचित स्थान नहीं था और इतनी जल्दी किराये पर कमरा मिलना भी मुश्किल था।

जिस दिन मैंने कार्यालय में पद ग्रहण किया उस दिन शाम को छुट्टी के समय साथ में काम करने वाले मेरे एक मित्र दिनेश ने कहा, चलो आज हमारे हॉस्टल में चलो, वहीं रुकना। मैं खुशी-खुशी हॉस्टल में गया, वहाँ जाकर मुझे मेरा सपना (हॉस्टल में रहने का) सच होते दिखा। मुझे बहुत खुशी हुई। फिर क्या, हॉस्टल में रुकते ही वहाँ के सभी लोगों से ऐसी दोस्ती हुई कि जैसे मैं उनको बचपन से जानता हूँ। सबसे बड़ी बात यह थी कि कोई उत्तर प्रदेश से तो कोई पंजाब, हरियाणा, बिहार से तो कोई मध्य-प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र तथा कर्नाटक से था ऐसा लग रहा था कि जैसे पूरा भारत इस हॉस्टल में ही रहता है। फिर उस एक दिन रुकने के बाद, मैंने इसी हॉस्टल में रहने का मन बना लिया और आखिरकार यहीं पर रहने लगा। यहाँ का माहौल बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैं सोचता था। यहाँ रहते हुए साल से अधिक हो गए हैं।



यहाँ की सुबह से लेकर रात तक पता ही नहीं चलता कैसे वक्त गुजर जाता है। रात्रि भोज के दौरान तो ऐसा लगता है कि ये शाम कभी खत्म ही न हो क्योंकि जब सब लोग एक साथ खाना खाते हैं तो कोई किसी की थाली से खाना लेता है तो कोई किसी की। सब खाना खाते-खाते अपनी-अपनी दिनचर्या के बारे में बताते हैं। किसने कितना काम किया, किसने कितनी मस्ती की और खाते-खाते एक घण्टा कैसे बीत जाता है, पता ही नहीं चलता। पूरे दिन की थकान ऐसे दूर हो जाती है कि जैसे सुबह से कोई काम ही नहीं किया है। जब भी किसी की कोई और परेशानी होती है तो सब एक-जुट हो जाते

हैं। घर की कमी या परिवार की याद बिल्कुल नहीं सताती। तबियत खराब होने पर जल्दी से हॉस्पिटल पहुँचाना या बाजार से दवाई लाने जैसे काम पल भर में हो जाते हैं। जैसे घर में किसी की तबीयत खराब हो जाती है तो सब परेशान हो जाते हैं और उसका इलाज करवाते हैं वैसे ही इस हॉस्टल में हैं। जब तक ठीक न हो तब तक उसकी देख-भाल करते हैं। ये देखकर तो जी करता है कि काश ऐसा हर जगह हो। ऐसी मदद हर किसी के मन में बस जाए। इस हॉस्टल की एकता को देख मन को इतना सुकून मिलता है कि सोचता हूँ कि काश भारतवासी भी ऐसी ही एकता से रहें और दुर्भावों को छोड़कर सौहार्द्रपूर्ण जीवन व्यतीत करें। सरिताओं से प्रवाहित होते हुए मनुष्यता के क्षीर-जलधि का संगम करेगा जहां हर-एक बूँद स्वतः अमरत्व धारण किए हुए हरि-आश्रय में अनंत आनंद का व्यापार करेगी। मगर लगता है कि यह सपना ही रहेगा क्योंकि हम भारतवासी अपने दुराग्रहों और स्वार्थों का त्याग नहीं करना चाहते हैं।



“मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसका अज्ञान है।”

— चाणक्य



चीड़वन, अल्मोड़ा
छायाकार— आर० एस० नेगी, लेखाधिकारी



गुच्छूपानी, देहरादून
छायाकार-दीपा पंवार, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

घर के दानव



बबीता
बहुकार्यकर्मी

दहेज के राक्षस का समाज में सदियों से रहा है वास
ये हर दिन अपनाता है नये-नये अत्याचार ।

दहेज के राक्षस ने छीन ली, हमारी बेटियों की जान
दहेज के राक्षस, इन पर करते अनेकों यातनाओं से प्रहार,
कभी पिलाया जहर, कभी बनाई दासी,
बहुत छटपटाई लेकिन कभी जलाई, और लगा दी फाँसी ।



कांप उठता है मेरा तन-मन पढ़कर ये समाचार,
मेरे साथ न ऐसा हो जाए कभी कोई अत्याचार ।

ये न करते शर्म ना करते लिहाज, ये तो करते सिर्फ अत्याचार
दहेज तो है समाज के लिए अभिशाप यह करता है समाज को बर्बाद
आओ! कसम लें, मिलकर कर दें, हम सब इसका सर्वनाश ।



“जिस प्रकार नेत्रहीन के लिए दर्पण बेकार है, उसी प्रकार बुद्धिहीन के लिए विद्या बेकार है।”

— मुंशी प्रेमचंद

राष्ट्रभाषा विचार संग्रह नामक पुस्तक जो सन् 1954 में तत्कालीन मराठी भाषी विद्वान, श्री चित्तले एवं जोगलेकर द्वारा प्रकाशित की गई थी में अहिंदी भाषी विद्वानों के विचारों का संग्रह किया गया है, उनमें से उदाहरण के लिए कुछ विचार प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

मराठी विद्वान, प० वैशंपायन का मानना था कि “हिंदी केवल अपनी सरसता, ओजस्विता एवं मधुरता से ही भारत को मोहित नहीं करती प्रत्युत उसका विशाल प्राचीन साहित्य भी हमें गौरवान्वित करता है, जिसमें हमें अपनी संस्कृति अपनी उज्ज्वल एवं अमूल्य निधियों के दर्शन होते हैं, हिंदी हमें अपनेपन का अहसास कराती है, वह हमें अपनों से जोड़ती है।”

सुप्रसिद्ध कन्नड़ लेखक रंगेयराव दिवाकर ने अपने विचार निम्न प्रकार व्यक्त किये थे। “मैं राष्ट्र प्रेमी हूँ, इसलिये, सभी राष्ट्रवासियों, राष्ट्रीय वस्तुओं तथा राष्ट्रभाषा से भी प्रेम करता हूँ। मैं राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय जनता एवं राष्ट्रभाषा प्रेम में फर्क नहीं देखता हूँ, नहीं तो मेरा राष्ट्रप्रेम अधूरा रह जायेगा। हम जानते हैं कि हिंदी व संस्कृत के अलावा इस देश में अनेक लिपिबद्ध एवं ग्रंथस्थ भाषायें भी हैं, जो दो हजार से भी अधिक वर्ष पुरानी हैं, प्रौढ़ हैं, उदात्त हैं और प्रगतिशील हैं, लेकिन हमने हिंदी को बड़ी बहिन का स्थान देने का निश्चय किया है।”

श्री क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय जो मूलतः बंगला भाषी थे, ने हिंदी को राष्ट्रभाषा न मानने पर अपनी हार्दिक वेदना को इस प्रकार व्यक्त किया था.....।

“आज हिंदी के लिये हर्ष के साथ-साथ खेद का समय भी है। हर्ष इस बात का है कि परिषद् द्वारा हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत की गई है और खेद इसलिये है कि इस स्वीकृति में पेच है। इस देश में उचित बात पर भी लोग एक मत नहीं हो पाते हैं।”

तमिल भाषी विचारक अनंतशयनम् अयंगर ने तो अंग्रेजी में भाषण देना ही बंद कर दिया था। उनका हिंदी प्रेम कुछ इस प्रकार झलकता है.....।

“अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी अंग्रेजी अगर यहाँ रह जाए तो हमारे राष्ट्रपिता द्वारा दिया गया नारा “अंग्रेजो भारत छोड़ो” का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। यदि स्वतंत्र भारत में भी हम अंग्रेजी को गले लगाये रहे तो हमारी अयोग्यता का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है। “अब अंग्रेजी छोड़ो, और अपनी राष्ट्रभाषा को अपनाओ अंग्रेजी ने हमारी संस्कृति का विनाश कर दिया है, हमारे दृष्टिकोण को बदल डाला है। हमें अंग्रेजी भाषा की सत्ता का अंत कर देना चाहिए।”

आदरणीय वीर सावरकर जो मूलतः मराठी भाषी थे ने स्वातंत्र्योत्तर भारत की भाषा के प्रति अपने विचारों की अभिव्यक्ति निम्न प्रकार की थी। “भारत के कोने-कोने में यहाँ से वहाँ तक बोली जाने वाली सर्वसाधारण की एकमात्र भाषा हिंदी ही है। इसे सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि कई वर्षों से सभी प्रांतों के, सभी धर्मों के सन्यासी, रामेश्वरम् से बद्रीनाथ तक, जगन्नाथ पुरी से द्वारका तक चाहे जैनधर्मीय हों, बौद्धधर्मीय हों या हिन्दू धर्मीय हों अपने धार्मिक, विचारों की अभिव्यक्ति हिंदी के माध्यम से करते आ रहे हैं।

उक्त विचारक सभी अहिंदी भाषी होते हुए भी हिंदी को भारत की भाषा मानने के लिए प्रतिबद्ध थे। स्पष्ट है कि उन्होंने हिंदी का विरोध क्षेत्रीय आधार पर नहीं किया। राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिए एक भाषा एक संविधान, एक झण्डा होना ही चाहिए। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लिए इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्या, कोई राष्ट्रगान अथवा राष्ट्रगीत को हिंदी से इतर किसी अन्य भाषा या अंग्रेजी में गा सकता है? यदि नहीं, तो कल्पना कीजिए कि राष्ट्रभाषा कितनी महत्वपूर्ण है उसके बिना हम अपूर्ण हैं।



गज़ल



सुशील देवली
सहायक लेखाधिकारी

हर दफा ताश के पत्तों में अपनी तकदीर वो जीता है,
इस दांव पेंच के खेल में शायद ही कोई गुलाम जीता है।

हर बार लगाता है अपनी किस्मत का दांव थोड़ा थोड़ा,
मुफलिसी में मुफलिस शर्बत नाकामियों के पीता है।

इक घाव सा बना देते ये दांव इस जिंदगी में,
भला युधिष्ठिर इस खेल में कौन सी जंग को जीता है।

इस बावन पत्तों के मिजाज को किसने देखा, ऐ सुशील,
इसका नशा फिर आदमी को बिन पिये ही पीता है।



यूं तो जिंदगी हर वक्त ही पेंच दांव का खेल है,
नाकाम हुआ वो 'शायर' कामयाब 'बादशाहो' की तरह जीता है।



“कविता वह सुरंग है, जिसमें से गुजर कर मनुष्य एक विश्व को छोड़कर
दूसरे विश्व में प्रवेश करता है।”

— रामधारी सिंह दिनकर

आर्थिक विकास बनाम प्राकृतिक आपदाएं



रेखा

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड

प्राकृतिक प्रकोप ने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य प्रकृति के समक्ष बौना है। जब-जब प्राकृतिक आपदाएं आयी हैं—मानव केवल मूक, दर्शक बन चुपचाप इन्हें देखता रहा है। मानव केवल आपदाएं लाने में कारगर भूमिका निभा रहा है। परन्तु इनकी भीषणता के बढ़ने पर अक्षम साबित हो रहा है। हाल ही में नेपाल में आए तीव्र भूकम्प की घटना हो या 2013 में केदारनाथ में आयी बाढ़ की विभिषिका हो, हम कुछ नहीं कर पाए। देखते ही देखते जन-धन की हानि इतनी भयावह हुई है कि दोनों ही घटनाओं में हमें यह सोचने को विवश होना पड़ता है कि यह विकास है या विनाश। प्रत्येक वर्ष बाढ़, भूकम्प, सूखा, भूस्खलन, चक्रवात ज्वालामुखी आदि घटनाओं से समस्त विश्व को दो चार होना पड़ता है।

प्रश्न उठता है, कि इन आपदाओं को लाने में आर्थिक विकास की कितनी भूमिका है। क्या ये कहा जा सकता है कि अगर आर्थिक विकास न हुआ होता तब भी ऐसी भयावह आपदाएं आतीं? अगर आर्थिक विकास ही इन आपदाओं की क्रमिकता एवं तीव्रता के मूल में है तो किस सीमा तक आर्थिक विकास की प्रक्रिया को कम या धीमा किया जाए कि आपदाओं में कमी आए? इन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए हमें दोनों अवधारणाओं की तह में जाकर दोनों के परस्पर संबंध व एक-दूसरे पर पड़ने वाले प्रभावों की पड़ताल करनी होगी।



ये कहना कि आर्थिक विकास न होता तो आपदाएं नहीं आती तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता क्योंकि औद्योगिकरण से पहले भी बाढ़ सूखा, भूकम्प, ज्वालामुखी आदि की घटनाएं होती थीं। परन्तु इनकी तीव्रता एवं आव्रता वैसी नहीं थी जैसी आज है। इसलिए इनके पीछे कहीं-न-कहीं जो विकास मानव ने पिछले 200-300 वर्षों में किया है उसी से आपदाओं की बारम्बरता का संबंध है।

औद्योगिकरण के फलने-फूलने से जिन देशों का विकास हुआ वह आज विकसित देश कहे जाते हैं, जो अभी विकास करने की प्रक्रिया में हैं वे विकासशील और कुछ देश अभी भी अल्पविकसित या अविकसित हैं। जो देश पूर्णतया विकसित हो चुके हैं, पर्यावरणीय, मुद्दे पर चिंता करने का कार्य भी उन्हीं का होना चाहिए

क्योंकि अपनी विकास प्रक्रिया में उन्होंने पर्यावरणीय ह्रास को महत्व नहीं दिया और अब ये विकसित देश चाहते हैं कि विकासशील देश अपने आर्थिक विकास की प्रक्रिया को इस प्रकार धीमा रखें कि पर्यावरणीय क्षति न हो यह बराबरी का दर्जा आर्थिक विकास करते समय न होकर अब क्यों है?

खैर, मुद्दे की बात करें तो वह यह है कि अब आर्थिक विकास कैसे प्रकृतिक आपदाओं का कारण है? वह ऐसे कि पर्यावरण को बनाए रखने के लिए वनों—पेड़, पौधों एवं जीव—जंतुओं के आवश्यक पारिस्थितिक संतुलन की जो, अवधारणा थी वह गड़बड़ा गयी है। मानव ने अपने हित के लिए प्रकृति का अंधाधुंध दोहन किया है। एक सीमा तक ही हम प्रकृति का उपयोग कर सकते हैं क्योंकि प्रकृति उपयोग हेतु है और उपयोग की गयी प्रकृति स्वयं फिर से उपयोग करने योग्य बन जाती है। परन्तु जब दोहन होने लगा तो प्रकृति भी अपने क्षय की भरपाई नहीं कर पायी, जिसका परिणाम हमारे सामने है। आज पर्यावरण संकट हमारे सामने है। जितनी भी प्रकृतिक आपदाएं आती हैं, उनके पीछे मानवीय कारण अधिक होते हैं। सूखे के पीछे भूमिगत जल का सूखना, वनों के विनाश से वर्षा में कमी होना मानव जनित कारण हैं।

बाढ़ एक व्यापक जन—धन की हानि वाली त्रासदी है, जिसका सामना समस्त विश्व प्रति वर्ष करता है। भूमि की जल सोखने की क्षमता में कमी, जल निकासी की समुचित व्यवस्था का अभाव, बांधों के टूटने, ग्लेशियर पिघलने से नदी जल स्तर में वृद्धि आदि मानव जन्य कारण हैं। चक्रवात, भूकंप, भूस्खलन, सुनामी के पीछे भी मानवीय गतिविधियां काफी हद तक जिम्मेदार हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में वनों की सघनता मिट्टी को जड़ों में बांधने का कार्य करती थी, लेकिन अब वनों के विनाश से भूस्खलन की घटनाएं बढ़ रही हैं। तटीय क्षेत्रों में मंग्रोव वनस्पतियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि ये चक्रवात सुनामी की तीव्रता को बाधित करने की क्षमता रखती है, परन्तु इनके आर्थिक और व्यापारिक महत्व के कारण इनका दोहन किया जा रहा है। खनन कार्यों से चट्टानें कमजोर होती हैं, जिससे भूकंप व भूस्खलन की घटनाओं की तीव्रता बढ़ी है। पर्वतीय क्षेत्रों में विकास कार्य करने से चट्टानें टूटकर गिरने का खतरा हमेशा बना रहता है।

कानून बनाए गए हैं, परन्तु आर्थिक विकास की राह में पर्यावरण सुरक्षा हेतु जो मानक या नियम हैं, मानव ने उनको स्वार्थ के वशीभूत होकर ताक पर रख दिया है। रेल, पुल, सुरंग, बांध, खनन, खनिज आदि कार्यों का होना विकास हेतु आवश्यक है, मगर कुछ बातों या मानकों को ध्यान में रखकर पर्यावरण को क्षति से बचाया जा सकता है।

यद्यपि आर्थिक विकास की प्रक्रिया को न तो धीमा किया जा सकता है, न ही रोका जा सकता है, लेकिन मनुष्य इतना बुद्धिमान प्राणी है कि वह कोई न कोई रास्ता खोजकर इसमें संतुलन स्थापित अवश्य कर सकता है। पृथ्वी पर मानव के विकास से लेकर अब तक मानव निरंतर विकास करता आया है, परन्तु पिछली दो—तीन शताब्दियों में जो विनाश हुआ है वह सोचनीय है। आर्थिक विकास मानव जीवन का अनिवार्य पहलू है तो प्राकृतिक संतुलन अस्तित्व की सुरक्षा के लिए अपरिहार्य है। भारतीय संस्कृति में मध्यम मार्ग की परिकल्पना महात्मा बुद्ध द्वारा प्रदान की गई है, जो जीवन के हर क्षेत्र में स्टीक है।

आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संतुलन का संबंध प्रत्येक देश में उनकी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार भिन्न—भिन्न हैं। अतः ऐसे मानक बनाए जाएं जो सबके लिए उनकी आवश्यकता के अनुसार लागू हो सकें। प्रकृति का अपना एक निश्चित क्रम चलता रहता है। प्रकृति स्वयं उत्पादित होकर स्वयं में विलीन होती रहती है। बस प्रकृति के इस स्व—संतुलन से छेड़—छाड़ न की जाए तो प्रकृति हमें निरंतर कुछ—न—कुछ सकारात्मक देती रहेगी।

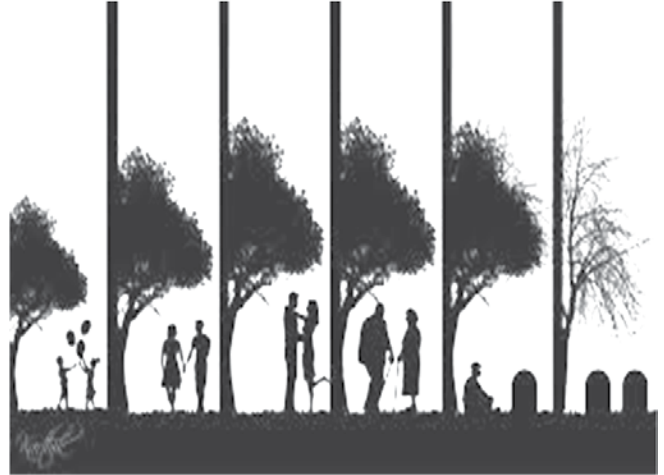


जीवन चक्र



रामबीर सिंह
वरिष्ठ लेखाधिकारी

बचपन से शुरू हुआ नवजीवन
माँ के आँचल में पोषण हुआ
बड़े लाडल-प्यार से पालन कर माता-पिता ने बड़ा किया
बाल-सखा संग-साथ मिला, उम्र हो गई बारह
बचपन कब बीत गया नहीं कभी पता चला
यौवन की दहलीज पर कदम रखे
बाल-सखा सब छूट गये, सीख गया
ये मेरा और ये तेरा
न जाने कब उम्र हो गई सोलह
आई जवानी, दोस्त बदल गये अपनी यारी
शादी कर दी 23 में पत्नी हो गई प्यारी
बन गई जीवन संगिनी हो गये हम दो से चार
भेष बदला, सोच बदली बदले आचार-विचार
पीछे मुड़ के देखा नहीं, छूटा जाये संसार
रिश्ता-रिश्तेदार मिले, हो गई उम्र पचास
अहम् जागृत ऐसा हुआ मन में आई खटास
मन में आई खटास, मीठे बोल नहीं सुहाते
मन में राम बगल में छुरी
जहर उगलते नहीं अघाते
आगे बुराई-पीछे बुराई
करते-करते उम्र हो गई बहत्तर
सारा जीवन गवां दिया
बदलने चला अब चरित्र
सज गया चोला निकली अस्थी
पहुँचा शमशाम घाट
चिता पर लेटा सोच रहा
क्यों आया संसार में
भला किसी का किया नहीं
जीवन बिताया व्यभिचार में
अब पछताये क्या होत है
जब चिड़िया युग गई खेत।



समझ से परे



ओम प्रकाश
वरिष्ठ लेखाधिकारी

मेरा बचपन भी आम हिन्दुस्तानी गरीब बच्चों की तरह ही गुजरा है। मेरे पास बचपन में जूते नहीं थे। दूसरे बच्चों को जूते पहन स्कूल जाते देखता था तो मैंने भी अपने बड़ों से जूतों की मांग की तो मेरी दादी ने एक कहानी मुझे सुनाई, कुछ लोग गांव से कुछ दूर एक मेला देखने जा रहे थे, उनमें से कुछ लोगों ने जूते पहन रखे थे, तथा धूप से बचने के लिए छाते लगा रखे थे परन्तु एक व्यक्ति ने अपने जूते हाथ में ले रखे थे, साथ ही छाता सिकोड़ कर बगल में दबा रखा था और बिना जूते पहने ही पैदल चल रहा था। रास्ते में एक नदी पड़ी तो सभी लोगों ने अपने जूते उतार कर अपने हाथ में ले लिये परन्तु जो व्यक्ति बिना जूते चल रहा था उसने अपने जूते पहन कर नदी पार की तथा नदी पार करते ही फिर से जूते उतार कर अपने हाथ में ले लिए। धूप से बचने के लिए सभी लोग एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये तथा अपने छाते सिकोड़ कर रख लिए परन्तु उस व्यक्ति ने जिसने छाता सिकोड़ कर बगल में दबा रखा था, छाता खोल कर सिर पर लगा लिया।

उस व्यक्ति की इस कार्य प्रणाली को देख साथ वाले सभी लोग बड़े आश्चर्यचकित हुए तथा उससे पूछ ही लिया "भाई आपने नदी पार करते समय जूते पहन लिए थे तथा अब जबकि हम सबने अपने-अपने छाते बंद कर लिए हैं परन्तु आपने अपना छाता खोल कर सिर पर लगा लिया है। आपका यह कार्य समझ से परे है।" अब मेरी दादी ने मुझसे प्रश्न पूछा, "बताओ वह व्यक्ति समझदार है या नासमझ?" तब मेरा उत्तर था वह मूर्ख था, भला ऐसा भी कोई करता है।



मेरी दादी ने मुझे समझाया कि उस व्यक्ति ने अपने साथ वाले व्यक्तियों से कहा भाई मुझे नदी का पानी गदला होने के कारण नीचे कुछ नजर नहीं आ रहा था कहीं पैर में कोई कांटा या कील न लग जाये इस लिए मैंने अपने जूते पहन लिए तथा पेड़ के नीचे छाता खोलने का कारण यह है कि पेड़ पर कई परिंदे बैठे हैं कहीं कोई बीठ न करदे, इस लिए मैंने अपने कपड़े बचाने के लिए छाता लगा लिया है। तभी उनमें से एक व्यक्ति ने फिर से प्रश्न किया, "एक बात और बताओ बंधु कि धूप से बचने के लिए भी तो छाता लगा सकते थे तथा जूते पहन कर भी तो सबके साथ चल सकते थे।" उस व्यक्ति ने प्रश्न का उत्तर बड़े ही सादगी से दिया "भाई पैदल चलते समय मैं संभल कर चल रहा था तथा साफ- साफ

जगह देख कर कदम रख रहा था उसी तरह मुझे बिना छाते के आकाश साफ नजर आ रहा था, कभी बादल भी आ जाते थे परन्तु मैं यह नहीं जान पा रहा हूँ कि पेड़ की डालियों पर कौन-कौन जीव बैठे हो सकते हैं कोई मेरे ऊपर न गिर जाये इस लिए मैंने छाता लगा लिया है।”

तब जूते मांगने की मेरी जिद को मेरी दादी ने यह कहकर टाल दिया कि आँख खोल कर साफ-साफ जगह पैर रख कर चला करो ताकि पैर में कोई कांटा या कील न लगे। बरसात का मौसम आने पर जूते दिला दिये जायेंगे।

यह कहानी मेरी दादी ने मुझे सुनाई थी। हो सकता है उन्हें उनकी दादी ने सुनाई हो। मैं इस रचना की मौलिकता के बारे में यही कह सकता हूँ।



“मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता और जागते रहने से भय नहीं होता।”

— चाणक्य

“आँख के अंधे को दुनिया नहीं दिखती, काम के अंधे को विवेक नहीं दिखता, मद के अंधे को अपने से श्रेष्ठ नहीं दिखता और स्वार्थी को कहीं भी दोष नहीं दिखता।”

— चाणक्य

“विचारको को जो चीज़ आज स्पष्ट दिखती है दुनिया उस पर कल अमल करती है।”

— आचार्य विनोबा भावे

सूचना अनुरोधपत्रों का निस्तारण: ध्यानार्थ महत्वपूर्ण बिंदु



विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के अंतर्गत प्राप्त होने वाले अनुरोध-पत्रों के निस्तारण में ध्यान देने योग्य बिंदु:-

- उपर्युक्त अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त आवेदन-पत्रों के संबंध में यह सुनिश्चित करने हेतु कि संबंधित अनुरोध पत्र सूचना का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त वैध अनुरोध-पत्र है या नहीं, यह देखा जाना चाहिए कि उसके साथ अधिनियम के अंतर्गत सूचना प्राप्ति हेतु निर्धारित शुल्क मान्य तरीके से प्राप्त हुआ है या नहीं अर्थात् शुल्क बैंक ड्राफ्ट/बैंकर्स चेक/पोस्टल आर्डर के माध्यम से या फिर नकद प्राप्त होना चाहिए।
- अनुरोध-पत्र को ठीक से जाँच करने के बाद यह सुनिश्चित करना चाहिए कि क्या उक्त अनुरोध-पत्र आपके कार्यालय से ही संबंधित है या नहीं। अर्थात् संबंधित अनुरोध-पत्र को अधिनियम की धारा 6(3) के अंतर्गत अन्य प्राधिकारी को हस्तान्तरित किया जाना अपेक्षित तो नहीं। यदि ऐसा किया जाना अपेक्षित है तो यह कार्य 05 दिनों के अंतर्गत किया जाना चाहिए। इसके साथ ही यदि अनुरोधकर्ता से अतिरिक्त शुल्क अपेक्षित है या फिर तृतीय पक्ष से संबंधित सूचनाएं प्रदान किया जाना अपेक्षित है तो नियमानुसार अपेक्षित कार्यवाही निर्दिष्ट अवधि में तत्परता से किया जाना चाहिए।
- यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सूचना का अनुरोध-पत्र केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी को सम्बोधित किया गया है या अपीलीय प्राधिकारी को। यदि प्राप्त अनुरोध पत्र अपीलीय प्राधिकारी को सम्बोधित है तो अनुरोध पत्र पर अपीलीय प्राधिकारी के स्तर से निर्णय किया जाना अपेक्षित होता है। अपीलीय प्राधिकारी द्वारा पारित आदेश 'स्पीकींग आर्डर' होना चाहिए।
- यह सुनिश्चित होने के पश्चात् कि अनुरोध पत्र का जवाब हमारे कार्यालय के स्तर से दिया जाना अपेक्षित है, अनुरोध पत्र में यह देखा जाए कि कितने बिंदुओं पर सूचनाएं प्रदान की जानी अपेक्षित है। उत्तर में भी सभी बिंदुओं पर यथास्थिति सूचना प्रदान की जानी चाहिए।



सूचना का
अधिकार

- सूचना के अनुरोध पत्र की प्राप्ति तिथि एक महत्वपूर्ण बिंदु है क्योंकि सूचना प्रदान करने हेतु समय-सीमा 30 दिन की अवधि का निर्धारण इसी आधार पर किया जाना है। अनुरोध पत्र के प्रक्रिया में रहने के दौरान यह अवधि हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए। निर्धारित अवधि में वांछित सूचना प्रदान न किये जाने पर यह माना जायेगा कि संबंधित लोक प्राधिकारी ने अधिनियम की धारा 7(2) के अंतर्गत सूचना के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया है।
- सूचना प्रदान करते समय पत्र में संलग्नकों की संख्या का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए तथा पत्र को डिस्पैच करते समय यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी संलग्नक पत्र के साथ लगाये गये हैं। यदि अनुरोधकर्ता ने प्रमाणित प्रतियों की मांग की है तो छायाप्रतियों को प्रमाणित करके प्रेषित किया जाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी छायाप्रतियां यथासम्भव सुस्पष्ट हों।
- सूचना प्रदान करते समय यह सुनिश्चित किया जाये कि केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी का नाम, पदनाम, कार्यालय दूरभाष संख्या एवं ई-मेल आईडी0 का उल्लेख किया जाये। यदि अनुरोधकर्ता को वांछित सूचना उपलब्ध कराना सम्भव नहीं है, तो सुसंगत धाराओं का उल्लेख करते हुए सूचना प्रदान न करने के कारणों का स्पष्ट उल्लेख करना चाहिए। प्रस्तर के अंत में यह स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए कि प्रथम अपील, कितनी अवधि के भीतर की जा सकती है। नियमानुसार प्रथम अपील निर्धारित अवधि के समाप्त होने अथवा केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी से संसूचना प्राप्त होने की तारीख से 30 दिनों की अवधि के भीतर की जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि प्रथम अपीलीय प्राधिकारी का नाम, पदनाम, पता, कार्यालय दूरभाष संख्या एवं ई-मेल आईडी0 का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए।

सूचना का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त होने वाले अनुरोध पत्रों के निपटान में प्रयोग में आने वाली महत्वपूर्ण धाराएं/उप धाराएं:-

- धारा 6(1) सूचना प्राप्त करने का अनुरोध।
- धारा 6(3) सूचना अनुरोध पत्र का स्थानान्तरण अन्य प्राधिकारी को करना।
- धारा 7(1) सूचना अनुरोध पत्र का निपटान 30 दिनों के भीतर।
- धारा 7(3) सूचना उपलब्ध कराने हेतु अतिरिक्त शुल्क की मांग।
- धारा 8(1) सूचना के प्रकटन से छूट के संबंध में (a) से (j) तक के प्रावधान।
- धारा 11 तृतीय पक्ष से संबंधित सूचना।
- धारा 19(1) प्रथम अपीलीय प्राधिकारी को अपील।
- धारा 19(2) लोक सूचना अधिकारी द्वारा तृतीय पक्ष से संबंधित सूचना को प्रकट करने के आदेश के विरुद्ध अपील।
- धारा 19(3) सूचना आयोग को द्वितीय अपील।
- धारा 20 शास्ति के संबंध में प्रावधान।



“गरीब वो नहीं जिसके पास कम है, बल्कि धनवान होते हुए भी जिसकी इच्छा कम नहीं हुई है, वह सबसे अधिक गरीब है।”

— आचार्य विनोबा भावे

साधना



प्रवीन कुमार मिश्रा
लेखाकार

एक पल भी साधना का सिलसिला छूटे नहीं,
जब तलक हो प्राण तन में ये लगन टूटे नहीं।

आयेगा दिन चीरकर, गहरी निशा को तोड़ के,
गर प्रयासों में सघनता, हो अगर जी तोड़ के।

हर साँस में है लक्ष्य साधे, उस प्रभु की आस में,
मिल सकेगा लक्ष्य उसको, अनवरत प्रयास से।

हर विफलता है सिखाती, है प्रयासों में कमी,
दूर करना उस कमी को, पहचानकर बस क्षण उसी।

सुख ही बाँटे दुख: बंटाये, गर ये दिल में ठान ले,
हर मनुष्य इस भू धरा का, गर ये मन में मान ले।

साथ सबका हो मनो से, गर प्रयासों में सही,
एक पल भी साधना का सिलसिला छूटे नहीं।



“कविता गाकर रिझाने के लिए नहीं, समझकर खो जाने के लिए है।”

— रामधारी सिंह दिनकर



बाघनाथ मंदिर, बागेश्वर

छायाकार— महावीर सिंह, सहा० लेखाधिकारी



चित्तईगुल मंदिर, अल्मोड़ा

छायाकार—प्रशांत जोशी, बहुकार्य कर्मी



नाबि गाँव से हिमालय दर्शन, पिथौरागढ़
छायाकार— किशोर सिंह कुडियाल, सहा० लेखाधिकारी



श्रीकंठ—धराली, उत्तरकाशी
छायाकार— समबीर सिंह, वरि० लेखाधिकारी

जगतगुरु की माया



प्रशान्त जोशी
बहुकार्यकर्मी

जगतगुरु की माया जग न जान पाया ।
दुनिया के सत्य को न पहचान पाया ॥
संसार की रक्षा कालकूट विष पान किया ।
जगत ने नीलकण्ठ का नाम दिया ॥
राम सदा हृदय में वास करते ।
गोपी रूप गोविन्द के साथ स्वयं रास करते ॥
गोपेश्वर रूप जग में विख्यात हुए ।
जिस रूप से नारायण भी दास हुए ॥
जिनके लिये सारे भक्त एक समान ।
आराध्य की भक्तों से पहचान ॥
भक्तों को आपने कभी न निराश किया ।
भक्तों के लिये कण-कण में वास किया ॥
शिव स्वयं सत्य में निवास करते ।
भक्तों के हृदय सदा वास करते ॥



“दुष्टों का बल हिंसा है, शासकों का बल शक्ति है, स्त्रीयों का बल सेवा है
और गुणवानों का बल क्षमा है।”

— रामधारी सिंह दिनकर

छड़ी



संजय रैणा
सहायक लेखाधिकारी

खलाफ—ए—मामूल^१ वो नौ बजे दफ़्तर पहुंचा। जंग आलूदा^२ साईकिल दीवार के सहारे खड़ी कर, खालीस चमड़े का घिसा पिटा बैग बगल में दबाये सुरती मलते—मलते सैक्शन जा पहुँचा। फाइलों का ढेर व उलझी हुई कुर्सियां मुंह चिढ़ाने लगीं। “साढ़े नौ बजे का दफ़्तर है..... मगर यहां सब दरहम बरहम^३. अब तो चपरासी भी नवाब हो गए..... कामचोर निकम्मा.....न सफाई..... न सुराही में पानी..... आने दो इस..... आज सीधा करके ही दम लूंगा।” इधर उधर नज़रें दौड़ाई तो निगाहें दीवार से लटकते कलैण्डर पर जा रूकीं फिर केंद्रित हो गयीं आज अगस्त की आखरी तारीख है। रामशरण जो स्कूल में रामसरण और दफ़्तर में बड़े बाबू हो गए थे, नें सुरती निचले जबड़े में कहीं दाब दी..... यकायक एक कुर्सी खींच लीं और नीमदराज़^४ हो गए।

मद—मुकाबिल^५, सैक्शन आफिसर की आरामदेय कुर्सी घूरने लगी, उसने लम्बी ठण्डी सांस ली। “कल का छोकरा सीने पे मूंग दल रहा है, काम काज का सलीका नहीं मगर तनख्वाह.....रुतबा तजुरबाकार मुलाज़िम का हक है कि महकमाना इम्तेहान पास करने वालों की जागीर, मैं आज तक समझ नहीं पाया..... और न शायद हुकूमत ही। इसीलिए कोई दफ़्तर ढंग से.....” बड़े बाबू ना—उम्मीद हो गए। पहलू बदला तो बाएं तरफ मिश्रा जी की कुर्सी थी, “ये मिश्रा जी भी. पता नहीं किस मिट्टी का बना है सुबह से शाम तक इन बेजान कागज के पुलन्दों में सर खपाते रहते हैं, थकने या बोरियत का नाम ही नहीं लेते.....! जितने भी सायिल^६..... सब बगल में बैठकर अपनी अपनी गुत्थी सुलझा के जाते हैं। बहुत ही मेहनती और अज़—हद ज़िन्दा—दिल भी, अक्सर चाय पानी के पैसे अदा करते हैं, मैंने शायद ही कभी पिलाई हो.....!”



“राम राम बड़े बाबू”! चपरासी दरवाजे से कपड़ा खींचते हुए बोला।

- १ असामान्य
- २ युक्त
- ३ अस्त—व्यस्त
- ४ आराम की मुद्रा
- ५ आमने—सामने
- ६ याचक

“नमस्कार” बड़े बाबू सुरती थूकने के लिए जगह ढूँढ़ने लगे।

“बहुत जल्दी आ गये आज” चपरासी मिश्रा जी के मेज को साफ कर चुके थे। बड़े बाबू का धड़कता दिल जैसे गरम पानी में डूब गया। हरातर नाक और कानों से खारिज होने लगी, अपने आप को संभाला, दराज़ खोला हाथ अन्दर डाला तो कई फटे, पुराने, नये, अदनये कागज़ात हाथ लगे। चार्ज रिपोर्ट दो अहम फाईलें गुम हैं.....! “कहाँ जा सकती है? ये फाईलें शायद कभी थी ही नहीं।” एक कोरा कागज.....फाड़ने ही वाले थे कि पलटा..... उम्र 23 साल, कद दरमियाना, शक्ल-व-सूरत बुरी नहीं, तालीमी काबीलियत पता नहीं, पेशा टाईपिस्ट बड़े बाबू की लम्बी बेटी के लिए कोई रिश्ता आया था, कागज संभाल कर बैग में डाल दिया फिर हाथ अन्दर किया, खाली माचिस की डिबिया, तम्बाकू के खाली लिफाफे..... फिर कई कलम.....अधूरे रंग बिरंगें..... नामुकमल, पिन पैकेट.....टैग की उलझी हुई गुत्थी अपने हाथ और सिर दोनों दराज़ के अन्दर किये तो कुछ हिसाब किताब। जोड़ सही था, उम्र अठावन साल, कुल नौकरी तैंतीस साल दो माह, खालिस नौकरी बतीस साल ग्यारह माह और छः दिन (बाकीमांदा मुलाज़मत वक्तनः फवक्तन हड़ताल में शिरकत की बिना पर रद्द) पेंशन नौसौ तेरह रुपये माहवार व मंहगाई भत्ता, बाद-अज-मर्ग पेंशन बापत लावाहकीन^७ चार सौ पचास रुपये माहवार, ग्रेच्युटी तीस हजार एक सौ उन्नतीस रुपये.....! बड़े बाबू गरक-ए-अरक^८ हुए, गर्दन पर उभरी रंगे फड़फड़ाने लगी..... जनरल प्रोविडेंट फण्ड में जमा रकम के आगे सवालिया निशान लगा था, शायद गुज़शता साल बड़ी बेटी की शादी में उड़ गया था। उसने कमीज के आधे बटन खोल दिये और आंखे बन्द की।

सैक्शन में सब मुलाज़िम अपने अपने काम या फराइज़ में मसरूफ थे। सैक्शन आफिसर बुयें तने किसी फाईल को समझने की कोशिश में थे। मिश्रा जी हसब-ए-मामूल किसी सायिल की अर्जी पर गौर-व-खोज़ कर रहे थे, सुमन की मखरूती^९ उंगलियां टाइप राईटर पर अजीब साज़ छेड़े हुए थीं, त्यागी ने बैठे बैठे अंगड़ाई ली फिर कलम बन्द किया गर्दन से लटकते गेसुओं में उंगलियां फेरी और कुछ सोचते सोचते खड़ा होकर सुमन को देखते देखते सैक्शन आफिसर के सामने रुक गया “क्यूं साहब क्या तय रहा?” सैक्शन आफिसर ने आदतनः मिश्रा जी की तरफ इशारा किया, मिश्रा जी ने कुछ आहिस्ता-आहिस्ता कहा त्यागी ने जेब से कुछ रुपये निकाले, गिने फिर गिने..... और जेब में डालते हुए बोले, “नहीं हो पायेगा”, सुमन भांप गई उछल कर बोली “बड़िया कलम की जोड़ी यादव की दुकान से मिलेगी” त्यागी को मौका मिला बड़ी नफासत से बोले “सुमन जी आप भी कमाल करती हैं”, ज़रा सोचिए तो अब कलम से क्या सर-व-कार” सुमन खाहमखह शर्माने लगी।

“छतरी बड़ी वाली” सैक्शन आफिसर ने तजवीज़ की। “कई होंगी घर में फिर रंग भी तो काला है” मिश्रा जी मुतफिक न हुए, “जाओ..... जो बेहतर समझो जेब को मदद-ए-नज़र रखते हुए” सैक्शन आफिसर त्यागी को मजाज़ बनाकर खुद बेफिक्र हो गए।

ठीक पांच बजे शाम सैक्शन के लोग अपने अपने काम से फारिग होकर जमा हो गए, आलमारी खोली गयी, ताजा बरफी का बड़ा डिब्बा..... महकते गुलाब जामुन खट्टी मिठ्ठी दाल के दो लिफाफे, पान चपरासी गरम गरम चाय लेकर आया तो त्यागी का हाथ बटाने लगा। जितने लोग उतने गुलाब जामुन, बरफी के टुकड़े, चाय के गिलास..... पान जरूर कम था। त्यागी ने अपने हिस्से की

^७ आश्रित

^८ पसीने से तर

^९ अद्वितीय

बरफी सुमन के प्लेट में कर दी, सब जान गये मगर किसी ने दखलअंदाजी मुनासीब नहीं समझी..... फिर सैक्शन आफिसर लरज़ते कांपते शर्माते शर्माते उठे, कुछ रिवायती कलमें पढ़ें जिनको अमला कई बार सुन चुका था फिर तारीफ़े हुई बड़े बाबू की, इनकी लगन, फर्ज़ शनासी¹⁰, ईमानदारी, होशयारी, काबलियत, हाज़िरजवाबी की बड़े बाबू देख रहे थे और शायद सुन कुछ नहीं पा रहे थे, यकायक मिश्रा जी उठे और बड़े बाबू के पुरसकून जिंदगी की तमन्ना करते हुए उनके गले में ताजा फूलों का हार डाल दिया। और खामोशी ने सबको अपनी गिरिफ्त में ले लिया..... सब कुछ बन्द..... सिर्फ पंखे की करखत आवाज..... और..... बड़े बाबू के दिल की धक धक सुनाई दी, किसी ने इशारा किया कोई बरफी पर टूट पड़ा तो कोई दाल के दाने चुनने लगा, बड़े बाबू का हलक़ रत्ती भर उतारने पर अमादा न था मगर वो खाहमखाह जबरदस्ती किए जा रहे थे।

त्यागी कागज से मुंह पोछ चुका तो लापरवाही से बोले “आते हैं, अंकल” लफज़ अंकल बड़े बाबू के मुस्तैद कानों में क्या पड़ा की सीने पे सांप रींग गया, जी में आया कि इस नामुराद को बता दूं कि अब तुम घर या ननिहाल में नहीं दफ़्तर में आ गए हो और दफ़्तर में रिश्ते नहीं नाम, ज़ात या ओहदे से बुलाया जाता है, फिर सोचा जाने दो बताने से क्या फायदा और फिर त्यागी मुंहफट व नया रंगरूट जो ठहरा, कहीं जाते जाते मुआ ज़लील न कर बैठे और बड़े बाबू जहर के घूंट ही पीता रहा। मिठाइयां खत्म हुई तो चाय चली, फिर पान पत्ता, आखिर में बड़े बाबू खड़े हुए सबको गले लगाया सुमन ने हाथ जोड़े और जाने लगे, सैक्शन आफिसर ने अलमारी के पीछे छुपाई चमचमाती छड़ी उठाई और बड़े बाबू की तरफ बढ़ाते हुए बोले “बड़े बाबू आपके लिए” बड़े बाबू पर जैसे बिजली कौंद गई सोचा..... “अभी इसकी क्या ज़रूरत थी, अच्छा खासा चल फिर रहा हूं, घण्टों साईकिल दौड़ा सकता हूं भले ही उम्र अठावन साल की हो गई इसका मतलब थोड़ा यह हुआ कि मैं बूढ़ा हो गया, बेजान हो गया ? चाहो तो साबित कर दूं बारीक से बारीक लिखाई धीमी रोशनी में पढ़ सकता हूं, यादाश्त में भी शायद कोई कमी नहीं, कोई भी काम कर सकता हूं यह छड़ी मेरे किस काम की चाहो तो अभी दफ़्तर की तीनों सीढ़ियां चढ़कर चौथी मंज़िल से झांक कर दिखाऊँ.....” मगर सैक्शन ऑफिसर छड़ी थमा चुके थे ! बड़े बाबू की आंखे नम हुई, “आप चाहें तो घर तक छोड़ आये” मिश्रा जी ने अपनापन ज़ाहिर किया। “जी नहीं शुक्रिया साईकिल से आया हूं” और वो सैक्शन से बाहर आ गया.....

बड़े बाबू साईकिल पर सवार तो थे मगर ध्यान कहीं और भटक रहा था..... “क्या मैं वाकई बूढ़ा हो गया हूं ? और अगर मैं बूढ़ा हो गया हूं तो तो खांसता क्यों नहीं ? हाथ पांव कांपते क्यों नहीं.....? चश्मा भी तो नहीं लगा.....! हाज़मा भी दुरुस्त! अगर सबकुछ ठीक ठाक या सही सलामत है तो फिर मुझे घर क्यों..... नहीं मैं बूढ़ा नहीं हूं, उसने गले में पड़ा हार उतार फेंका, कुछ कोस साईकिल चलाने के बाद फिर ज़हन की दहलीज़ पर कोई दस्तक दे गया। शायद मैं बूढ़ा ही हूं..... उम्र पक गई है। सरकार यूं ही किसी को घर में तो नहीं बिठाती, पूरे अठावन साल की उम्र..... अठावन यानि पचास और आठ..... या दो साल कम साठ..... बहुत लम्बा सफर है, और फिर बूढ़ा होना कोई गुनाह या जुर्म भी तो नहीं..... हां शायद मैं बूढ़ा शायद क्या सौ फिसदी बूढ़ा हूं! साईकिल कई बार गिरते गिरते बच गई और फिर बड़े बाबू का बदन टूटने लगा.....टांगें भी दर्द करने लगीं..... हाथ भी लरजने लगे..... साईकिल की रफतार भी बतदरीज कम होने लगी..... थक गए तो सोचा अब इस साईकिल की सवारी भी मुनासिब नहीं, साईकिल जवानों की सवारी बेशक है.....न कि पेंशन याप्ता बूढ़ों की ज़रूरत ? घर पर पड़े पड़े खराब

¹⁰ कर्तव्य का बोध

हो जाएगी, बिक जाए तो गनीमत ! इधर उधर देखा तो एक साईकिल मिस्ट्री की दुकान देखी बड़े बाबू ने दुकान के सामने साईकिल रोकी।

“नमस्कार बड़े बाबू” मिस्ट्री ने साईकिल के पहियों की तरफ देखते हुए कहा जब कुछ समझ ना पाया तो बोले “कोई शिकायत.....?” “साईकिल खरीदेंगे?” बड़े बाबू आहिस्ता आहिस्ता बोले “छोड़ के जाइये बिक गई तो पैसे भिजवादूंगा, स्कूटर आ रहा है क्या ?” मगर बड़े बाबू बिना जवाब दिये ही साईकिल छोड़ गए। पास में ही घर था, वो छड़ी से खेलते खेलते फिर टिकाते टिकाते घर पहुँचे और पलंग पर दराज़ हो गए। बीवी ने पानी पूछा मगर बड़े बाबू ने जवाब देना मुनासिब नहीं समझा।

“तनखाह मिली” बीवी

“मिल.....तो..... गई” बड़े बाबू धीमें-धीमें,

“मै समझ गई थी”

“कैसे?” बड़े बाबू

“छड़ी देख कर, तनखाह के दिन कोई न कोई फिजूल चीज इस घर में जरूर आती है।”

“फिजूल चीज.....?” बड़े बाबू कुछ समझे नहीं।

“फिजूल नहीं तो और क्या, अब आप ही बताएं इस मुई छड़ी का क्या करना”..... इन्हीं पैसों से मुन्नी की चुनरी आ जाती, कब से ज़िद कर रही है मगर आप हैं कि

बड़े बाबू छड़ी को सिराहने रखते हुए बोले..... “ज़रूरत की चीज़ों को फिजूल नहीं कहते, आप समझती क्यों नहीं..... पूरे अठावन साल की उम्र हो गई है, दफ़्तर भी तो अब नहीं जाना है..... बिना छड़ी के कैसे चल फिर सकता हूँ” और वो कांपते कांपते खांसने की कोशिश करने लगे।

उक्त कहानी स्वरचित, मौलिक है तथा दिनांक 13.12.1995 को हिंद समाचार पत्र में प्रकाशित हो चुकी है।



इंटरनेट



प्रशांत कुमार
डी०ई०ओ०

विटामिन की कमी हो
सांसे उखड़ रही या थमी हों
आजकल रगों में खून की तरह
दौड़ रहा है इंटरनेट।

फेसबुक हो या वॉट्सअप हो,
बच्चों, बूढ़े सभी चलाएं,
तीन-तीन पीढ़ी को अब तो
जोड़ रहा है इंटरनेट।

बेटा क्या डाउनलोड करे
और बेटी क्या अपलोड करे
पेरेन्ट्स पर चिंता के पत्थर
तोड़ रहा है इंटरनेट।

जिन्हें मानती सारी दुनिया
बाबा, नेता और अभिनेता
कितनों की कुण्डली पर राहु
छोड़ रहा है इंटरनेट।

भारत हो, अमेरिका हो
श्री लंका या खुद पाकिस्तान
सब पर एटमबम आतंकी
फोड़ रहा है इंटरनेट।

बड़ी विडम्बना असली देखो
युवा वर्ग (देश की शान)
सौ में से नब्बे का रस्ता
मोड़ रहा है इंटरनेट।
आजकल रगों में खून की तरह
दौड़ रहा है इंटरनेट। ॐॐॐ



जौनसार बावरः एक संक्षिप्त परिचय



एस0 एस0 तोमर
कल्याण सहायक

जौनसार बावर क्षेत्र राजधानी देहरादून का एक अभिन्न अंग है जो मध्य हिमालय की गोद में बसा है। यह क्षेत्र पूर्व में हिमाचल प्रदेश राज्य का अंग था तत्पश्चात् सन् 1938 में इसका विलय जनपद देहरादून में कर दिया गया था जो वर्तमान में उत्तराखण्ड राज्य में स्थित है। इस क्षेत्र को आदिवासी जनजातीय क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। इस क्षेत्र में मात्र 417 गाँव हैं। जो प्राचीन काल से ही अपनी मौलिक सांस्कृतिक पहचान के लिए विश्व विख्यात हैं।

उत्तराखण्ड राज्य का यह भू-भाग उत्तर की दिशा में जिला उत्तरकाशी व हिमाचल प्रदेश की सीमाओं से एवं दक्षिण की दिशा में यमुना नदी जिला उत्तरकाशी व टिहरी गढ़वाल तथा देहरादून की सीमाओं से बहती हुई टौंस नदी के समीप बसा हुआ है। जिसका संगम पर्यटकों के रमणीक स्थल डाकपत्थर में है, जो राजधानी देहरादून से लगभग 50 किमी की दूरी पर स्थित है। देश- विदेश में विख्यात पवित्र पावनी यमुना व गंगा नदी के बीच हिमालय की गोद में बसा है। जौनसार बावर क्षेत्र अपनी पौराणिक संस्कृति और धार्मिक धरोहर को समेटे हुए इस धरती पर देवत्व का जीवन रूपी प्रसाद प्राप्त कर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानों कि जौनसार बावर क्षेत्र अपनी शोभा बढ़ाने के लिए इन दोनों नदियों का माला रूपी हार गले में पहने हुए है। हिमालय पर्वत की ऊँची-ऊँची चोटियाँ बर्फ की चादर से ढकी हुई ऐसी लगती हैं कि जैसे उनके सिर पर चाँदी का ताज (मुकुट) विराजमान है।

प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से मशहूर जौनसार बावर क्षेत्र हिमाच्छादित दुर्गम पहाडियों, नदियों, झरनों एवं सुंदर वादियों से लबालब समृद्धशाली है जिसमें ऊँचे-ऊँचे पर्वत व हरे-भरे देवदार, बांज, बुरास के जंगल तथा ऊँची-ऊँची बर्फीली चोटियाँ यहां की खूबसूरती को चार चाँद लगाती हैं। इस क्षेत्र को चकराता (चक्रनगरी) के नाम से भी जाना जाता है जिसमें प्राकृतिक सौन्दर्यता कूट-कूट कर भरी है। पर्वत की गगनचुम्बी चोटियाँ ऐसी लगती हैं मानों स्वर्ग यहीं पर विराजमान है।



इस क्षेत्र की प्राकृतिक सम्पदा प्राचीन संस्कृति एवं धार्मिक विश्वास अपने आप में एक अनूठी पहचान है, जिनका उल्लेख महाभारत काल से जुड़े स्कन्ध पुराण तक में मिलता है। यह क्षेत्र पाण्डवों की कर्म

भूमि रहा है क्योंकि पाण्डवों के अज्ञातवास से लेकर उनके विलुप्त होने तक की घटना इसी क्षेत्र से जुड़ी है इसलिए यहां के लोग स्वयं को पाण्डव का वंशज मानते हैं।

जौनसार बावर क्षेत्र में अभी भी संयुक्त परिवार प्रथा कायम है। एक परिवार में अधिक से अधिक संख्या में लोग एक साथ मिलजुल कर रहते हैं। यहां तक कि आज भी बड़े-बड़े परिवारों में सदस्यों की ये संख्या 60-70 तक है। परिवार में इतने प्रगाढ़ संबंध हैं कि आज भी एक ही चूल्हे पर एक साथ भोजन बनाया जाता है, जिसको सभी लोग एक साथ मिल बैठकर (परोसकर) खाते हैं। यहां के लोग देवों के देव श्री महासू देवता को कुल देवता (आराध्य) मानते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य देवी देवताओं की पूजा अर्चना भी अपनी मान्यताओं के अनुरूप की जाती है। यह क्षेत्र, माँ यमुना की पावन धारा के कारण ऋषिमुनियों, चार महासू देवता, पोखूदेवता, बौखनाग देवता, सोमेश्वर महादेव, कमलेश्वर महादेव, रुद्रेश्वर महादेव, माँ भद्रकाली, रघुनाथ देवताओं की तपोस्थली के रूप में भी जाना जाता है।

जौनसार बावर क्षेत्र, की अपनी एक विशेष पहचान होने के साथ-साथ अपने क्षेत्र की बोली, भाषा, रहन-सहन, वेश-भूषा, मेले, त्यौहार, शादी-विवाह के रीति रिवाज, धार्मिक त्यौहार मनाने के रिवाज हैं। यहां बारह महीने त्यौहार मनाये जाते हैं। यदि कोई त्यौहार नहीं आता तो भी माह के अंत में संक्रान्ति की पूजा अर्चना की जाती है। कुछ संक्रान्तियों को तो बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है जिससे आपस में मेल-मिलाप व मनोरंजन के साथ घरेलू प्रेम संबंध अच्छे बने रहते हैं। गाँव, खत (पट्टी) स्तर पर पंचायत (खुमड़ी) का सबसे सस्ता न्याय का विशेष महत्व, उच्च सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा समाज में महिलाओं को उच्च सम्मान इत्यादि परम्पराएं उल्लेखनीय हैं। इस क्षेत्र में टोपी व ढाटू (साफा) जो महिलाओं द्वारा सिर पर पहना जाता है उसका बड़ा मान व सम्मान है। यदि समाज में आपस में विरोधाभास या बड़ी से बड़ी शत्रुता हो जाती है और उसको खत्म करके आपस में मेल जोल बनाकर रखना चाहते हैं तो अपनी गलती को स्वीकार करते हुए पुरुष व महिला द्वारा टोपी व ढाटू से माँफी मांगने पर सुलह हो जाती है।

जौनसार बावर क्षेत्र की सीमाओं पर जुड़े होने के कारण हिमाचल प्रदेश व जिला उत्तरकाशी का रंवाई जौनपुर तथा जिला टिहरी गढ़वाल के क्षेत्र की सीमाओं पर बसे हुए समस्त ग्रामवासियों की आपस में अधिक से अधिक नाते रिश्तेदारियां हैं। साथ ही यमुना नदी व टौंस नदी के किनारे बसे हुए लोग जौनसारी बोली भाषा एवं वेश-भूषा को अपनाते हैं और उनका रहन-सहन व खान-पान, नाचना-खेलना, तीज-त्यौहार जौनसारी जैसा ही है। यह आश्चर्यजनक बात नहीं है कि आज भी इस क्षेत्र में एक रुपये का बहुत बड़ा महत्व है क्योंकि इस समाज में आज भी लड़की-लड़के का रिश्ता एक रुपये के बन्धन (जुबान पक्की) रखने पर ही तय हो जाता है। दहेज प्रथा का कोई रीति-रिवाज नहीं है। लड़की के विवाह में जो नेवता एकत्र होता है वह भी लड़की को ही दिया जाता है ऐसी परम्पराएं अभी भी प्रचलित हैं। गहनों का भी काफी रिवाज है जिसके प्रति महिलाएं ज्यादा आकर्षित रहती हैं। रिवाज के अनुसार शादी-विवाह, मेले त्यौहारों में अधिक पहने जाते हैं जिनको पहन कर यहां की महिलायें अप्सराओं जैसी दिखती हैं। कुदरत ने ऐसा मोहक रूप दिया है। यहां की महिलायें को कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है न ही इस प्रकार की व्यवस्था क्षेत्र में उपलब्ध है।

यदि हम समाज की बात करते हैं तो समाज ने महिलाओं को अलग से कोई सम्पत्ति का अधिकार नहीं दिया है, लड़कियों को माँ बाप द्वारा पालन-पोषण करके तथा पढ़ा लिखाकर बड़ा कर दिया जाता है उसके बाद किसी अच्छे परिवार में उसका विवाह अपने रीति-रिवाज व लग्नानुसार कर दिया जाता है। जहां पेट भरने को अन्न, तन ढकने को वस्त्र, रहने को मकान व काम करने को खेती-बाड़ी की मूलभूत

सुविधाएं ससुराल में मिल जाती हैं। अति संवेदनशील, परिश्रमी होने के साथ महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर दिन रात परिश्रम करती हैं। वह अपने जीवन-साथी के साथ अपने घर-समाज के कार्यों में महक बिखेर कर असम्भव को सम्भव करने में जीवन भर जुटी रहती हैं। पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं को हल करके खुशी से अपना जीवन व्यतीत करती हैं। माँ, बहन, पत्नी और बेटी के रूप में उसे अपने परिवार तथा समाज में भरपूर प्यार व सम्मान मिलता है। वह घर की लक्ष्मी, लाज-लज्जा, प्रतिष्ठा, गांव समाज की आन-बान, शान है। स्थानीय भाषा में अविवाहित लड़की को ध्याण और विवाहित को रईण कहा जाता है।

महाभारत काल से जुड़े इस आर्य मूल की संस्कृति के सरल, सौम्य जौनसार के मूल निवासी अभी भी प्रकृति के निकट रहते हैं। मनुष्य में ईश्वर का निवास है। जहां आज भी घर आये हुए मेहमानों को अतिथि देवो भवः के रूप में देखते हैं। सर्वप्रथम मेहमान से रामा-रूमी, नमस्कार, घर की राजी-खुशी, हुक्का-पानी के लिए पूछा जाता है। यहां पर एक विशेष बात और है कि गांव के नाम होने के साथ गांव में रहने वाले प्रत्येक परिवार का अपना-अपना नाम है। यदि कोई भी व्यक्ति किसी गांव में किसी परिवार वालों के यहां मेहमानदारी में जाता है तो वह उस परिवार का नाम लेकर पुकारता (बुलाता) है।

आज के युग में जमाने के बदलाव के साथ इस स्वभाव को छोड़ने पर यहां के लोगो को भी मजबूर होना पड़ रहा है। यहां पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आज लोक-संस्कृति समाप्त होती जा रही है जिसे जौनसार बावर के लोग अपनी संस्कृति के संरक्षण, सवर्धन एवं प्रचार-प्रसार के लिए प्रयासरत हैं। आज जब सम्पूर्ण विश्व विघटन की ओर अग्रसर हो रहा है और जहां एकाकी परिवारों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है वहीं जौनसार बावर क्षेत्र के लोगों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को आत्मसात् करते हुए सामूहिक परिवार आपसी भाईचारे की भावना, भाई का भाई के प्रति अगाध प्रेम एवं समर्पण की सच्ची तस्वीर को विश्व पटल पर रखे हुए है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में कहा गया है कि जहां नारी की पूजा होती है, वहीं देवता निवास करते हैं।



“मैं एक मज़दूर हूँ। जिस दिन कुछ लिख न लूँ, उस दिन मुझे रोटी खाने का कोई हक नहीं है।”

— मुंशी प्रेमचंद

“प्रतिभा का अर्थ है बुद्धि में नई कौपलें फूटते रहना। नई कल्पना, नया उत्साह, नई खोज, नई स्फूर्ति प्रतिभा के लक्षण हैं।”

— आचार्य विनोबा भावे

गज़ल



सुशील देवली
सहायक लेखाधिकारी

इक अजीब सी उलझन इक अजीब सी बेकरारी है।
कुछ तो है निगाहों में जिसकी राज़दारी है।

होंठ हैं खामोश और पलकें कुछ छिपाती हैं, पर
दिखता है निगाहों में जिसकी तस्वीर तुमने उतारी है।

और ये भी तो नहीं कि मोहब्बतें इल्म उनमें बचा नहीं।
सुना है हसरतों पे उनकी रिवाजों की पहरेदारी है।

ख़त का मज़मून पढ़ने वाले क़यामत की नजर रखते हैं।
जो दिखते हैं असल में होते नहीं क्या ख़ूब अदाकारी है।



और बड़े नाजुक लम्हों से सिले जाते हैं सिलसिले ऐ सुशील।
पुराने लम्हों का गुजरता ये सिलसिला अब मेरी ही तबियत पे भारी है।



“मातृभाषा, मातृ संस्कृति और मातृ भूमि ये तीनों सुखकारिणी देवियां स्थिर
होकर हमारे हृदयासन पर विराजें।”

— ऋग्वेद





औली-जोशीमठ, चमोली
छायाकार-समबीर सिंह, वरिष्ठ लेखाधिकारी



धर्मराज युधिष्ठिर शिवलिंग-लाखामण्डल, देहरादून
छायाकार-एस० एस० तोमर, कल्याण सहायक

हिम्मत



दीपा पंवार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

उम्र है छोटी पर हिम्मत बड़ी है
है अकेली, पर अजब ज़िद पर अड़ी है
दिल भले मोम सा हो कोमल,
पर सीने में लिए फौलाद खड़ी है

उठापटक ज़िंदगी की खुद ही सिखा रही
वो हौंसलों का पुलिंदा है उठाए चल रही
कि कौन जाने मुसीबत किस मोड़ पर खड़ी
अपनों से धोखों की जरूरत ही कहाँ पड़ी

ऐ दोस्त ! कड़वा हो बेशक, पर सच तो यही है,
इन चेहरों की भीड़ में, हर तरफ, तन्हाई ही भरी है
सब छोड़ देंगे दामन, टूट जाएंगे रिश्ते,
आखिर जो साथ होगी हिम्मत तेरी बड़ी है



रख हौंसला समझ, ये इम्तहां की घड़ी है
ठोकरें खाकर ही यहां, मुक्कमल ज़िंदगी हुई है
तारों से लड़-झगड़कर ही बदलेगी तेरी किस्मत
आजमा तो सही खुद को, क्या है, जो बस में नहीं है



“सबसे अधिक आनंद उस भावना में है कि हमने मानवता की प्रगति में कुछ योगदान दिया है। भले ही वह कितना कम, यहां तक कि बिल्कुल ही तुच्छ क्यों न हो।”

— डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन

व्याघ्रेश्वर का महत्व



महावीर सिंह रावत
सहायक लेखाधिकारी

मेले, तीज-त्यौहार हमारी संस्कृति के रंगों से सरोबार रहते हैं। इन मेलों में हमारी संस्कृति का सांस्कृतिक स्वरूप निखर कर सामने आता है, हमारी यह पावन भूमि विभिन्न रीति-रिवाजों और मान-मर्यादाओं की एक जीती-जागती थाती है। धर्म संस्कृति और परम्पराओं के सामंजस्य के कारण ही मेलों में जन-भावनाओं का ज्वार उमड़ पड़ता है। आस्था के प्रति श्रद्धा का भाव मन को आत्मविभोर कर अंतरात्मा को छू लेता है। उत्तराखण्ड की यह पावन भूमि देवभूमि नाम से प्रसिद्ध है, जहां हिंदू धर्म के अनेक तीर्थ स्थल हैं जिनमें श्री बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री महान तीर्थ स्थल हैं। जहां देश-विदेश से लाखों लोग प्रतिवर्ष दर्शनों के लिये आते हैं, तथा भगवान के दर्शनों से अपने आपको धन्य पाते हैं। इन्हीं में से प्रयागराज (इलाहाबाद) के समान बागेश्वर का भी अपना प्रमुख स्थान है। स्कंद पुराण के अनुसार भगवान भोलेनाथ की आज्ञा पाकर चण्डीश द्वारा बसाये गये इस स्थान में अनेक देवताओं के मंदिर हैं। जहाँ श्रद्धालुजन श्रद्धा व भक्तिभाव से इन मंदिरों में पूजा अर्चना कर पुण्य के भागी बनते हैं।

कहा जाता है कि बागेश्वर की यह पुण्य भूमि मार्कण्डेय ऋषि की तपस्थली थी। जिस प्रकार मां गंगा का अवतरण भगीरथ के तप से हुआ है उसी प्रकार सरयू का अवतरण महर्षि वशिष्ठ के तप से हुआ है। वशिष्ठ के पीछे-पीछे सरयू अथाह वेग से प्रवाहित हो रही थी, परन्तु मार्कण्डेय ऋषि की तपस्थली में प्रवेश करते ही अथाह वेग से प्रवाहित होने वाली सरयू ठिठक कर रुक गयी। महर्षि वशिष्ठ ने नदी मार्ग पर नील पर्वत की शिला पर मार्कण्डेय ऋषि को ध्यान मुद्रा में समाधिस्थ देखा तो वह नदी का आगे न बढ़ने का कारण जान गये। मार्कण्डेय ऋषि की तपस्या



उनके द्वारा भंग न हो इस भय से बचने के लिए उन्होंने भगवान भोलेनाथ को याद किया। महर्षि वशिष्ठ की व्यथा देख भगवान भोलेनाथ मां पार्वती सहित वहां प्रकट हो गये, दोनों में विचार-विमर्श होने के बाद भगवान भोलेनाथ ने व्याघ्र (बाघ) तथा मां पार्वती ने गाय का रूप धारण किया। व्याघ्र गाय पर झपटने लगा। गाय जोर-जोर से रम्भाती हुई मार्कण्डेय ऋषि की समाधि की ओर दौड़ पड़ी। रम्भाती गाय को देख मार्कण्डेय ऋषि की समाधि भंग हो गयी और वे व्याघ्र से गाय को बचाने के लिये दौड़ पड़े। इसी बीच सरयू ऋषि की समाधिस्थल को छूते हुए आगे बढ़ गयी। महर्षि वशिष्ठ प्रसन्न हुए। मायावी व्याघ्र व

गाय ने शिव व पार्वती का रूप धारण कर मार्कण्डेय ऋषि को दर्शन देकर कहा हे मार्कण्डेय !हम तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हैं, वर मांगो। हे मार्कण्डेय ! तुम क्या चाहते हो। मार्कण्डेय ऋषि ने कहा हे भगवान! आप इस स्थान पर व्याघ्रेश्वर नाम से प्रसिद्ध हों, भगवान शिव ने कहा तथास्तु। इस प्रकार भगवान शिव व मां पार्वती अंतरध्यान हो गये। कालांतर में इसका नाम व्याघ्रेश्वर से बागेश्वर हो गया।

सरयू, गोमती व लुप्त सरस्वती के त्रिवेणी के पावन तट पर प्राचीनकाल से ही भगवान शिव व्याघ्रेश्वर के रूप में विद्यमान हैं। आधुनिक मंदिर का निर्माण राजा लक्ष्मीचन्द ने करीब 1450 ई० में किया। जो अब बागनाथ नाम से प्रसिद्ध है। बागनाथ मंदिर के समीप बाणेश्वर (काल भैरव) का मंदिर भी है। वास्तुकला की दृष्टि से दोनों मंदिर समकालीन लगते हैं। बागनाथ मंदिर के पूरब व पश्चिम में दो पहाड़ी हैं। पूरब वाली पहाड़ी को भीलेश्वर कहा जाता है। इस पहाड़ी पर मां चण्डिका का भव्य मंदिर है। पश्चिम दिशा में नीलेश्वर पहाड़ी है जहाँ पर नीलेश्वर महादेव विराजमान हैं। बागनाथ मंदिर से थोड़ी दूरी पर पश्चिम दिशा में उल्का मां का मंदिर है। बागनाथ मंदिर के समीप ही एक प्रसिद्ध गुरुद्वारा भी है।

यह मेरा सौभाग्य था कि जनवरी 2015 में कोषागार, बागेश्वर एवं उपकोषागार, काण्डा के निरीक्षण अवधि में बागेश्वर के महत्व एवं उत्तरायणी पर्व को बहुत करीब से जानने-समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ। ऐसा संयोग जीवन में कभी-कभार ही प्राप्त हो पाता है। बागेश्वर का सुप्रसिद्ध पौराणिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं व्यापारिक उत्तरायणी मेले का आयोजन दिनांक 14.01.2015 से 18.01.2015 तक किया गया। सरयू और गोमती के संगम स्थल पर प्राचीन काल से मेले का आयोजन होता चला आ रहा है। उत्तरायणी पर्व पर लोग संगम पर स्नान कर मंदिर में पूजा-अर्चना करते हैं। इस सुअवसर पर भगवान बागनाथ के मंदिर में पूजा अर्चना हम लोगों ने भी की। इस मेले के अवसर पर पूर्व में भोटिया लोग अपनी सामग्री यहा बिक्री के लिये लाते थे। वस्तु विनिमय की यह एक पुरानी मण्डी हुआ करती थी। आज भी मेले में व्यापारी विक्रय के लिए अपना सामान लाते हैं। परन्तु स्थानीय सामग्री की मांग न होने के कारण धीरे-धीरे लुप्त प्रायः हो गई हैं। कहते हैं कि 1921 में यह मेला सामाजिक चेतना का प्रतिनिधित्व बनके उभरा। जिससे इस मेले को एक विशिष्ट पहचान प्राप्त हुई।

उत्तराखण्ड के लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का लुप्त आज भी लोग खूब लेते हैं। गांवों से भी लोग बड़ी संख्या में ऐसे कार्यक्रमों को देखने के लिए नन्हें-मुन्हें बच्चों संग आते हैं। स्थानीय भाषा में इस त्यौहार को “घुघुति त्यार” भी कहते हैं।

आज आधुनिकता के युग में जहाँ पौराणिक मान्यताओं को कम महत्व दिया जाता है वहाँ हमें अपनी पौराणिक एवं सांस्कृतिक पहचान कायम रखनी होगी, अपनी परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों पर विश्वास करना होगा। अगर हम ऐसा नहीं कर पाये तो वह समय दूर नहीं जब हम अपनी माटी से अपनी पहचान खो बैठेंगे, इसके लिए हमें सदा सचेत रहना होगा, अपनी माटी अपनी परम्पराओं से अपने आपको जोड़े रखना होगा, तभी हम अपनी सांस्कृतिक, पौराणिक धरोहर को भावी पीढ़ी के लिए संजोकर रख सकते हैं।



“मानव जिस लक्ष्य में मन लगा देता है, उसे वह श्रम से हासिल कर सकता है।”

— ऋग्वेद

चलो परी अब घर चलें



राकेश रंजन मिश्रा
हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड

चलो परी अब घर चलें,
अंधियारे से निकल चलें,
शाम ढली अब रात हुई
दीवारों में चल बंध चलें।
गर चिंगारी कोई उठ गई तो
आग से न कोई बच पाएगा,
इस अंधियारे के साये में,
इंसान न कोई रह पाएगा।

यहाँ जंगल के जंगली से ज्यादा,
शहरी गीदड़ दौड़ाते हैं
उजाले से वे डर खाकर
अंधियारे को अपनाते हैं।
खिलौनों से जो न खेल सके, वो
इन्सानों पर कतराते हैं
गर्दिश में वो हैवान होकर
कुदरत की बैड बजाते हैं।

न है उनका कानून कोई
हम सब कहकर थक जाते हैं
लेकिन न बनकर उम्मीद कोई
किसी को बल दे पाते हैं।
एक दूजे को ही दोष सभी
देकर के बस रुक जाते हैं
गर मिला कोई सहारा भी
औरों का गुण ही सुनाते हैं।

गर अंधियारे में हुआ 'राकेश' कोई
नतमस्तक होकर पछताते हैं
वरना वो तो हम सब पर भी
बादल बन कर मंडराते हैं।
अच्छाई अब इसी में है कि,
समय से हम भी लौट चलें
गर अच्छाई है आगे तो,
चलो परी अब घर चलें।



जौनसार बावरः धार्मिक पर्यटन स्थल



एस0 एस0 तोमर
कल्याण सहायक

कालसी, जौनसार बावर का मुख्य प्रवेश द्वार कहलाता है, जो राजधानी देहरादून से 50 किमी की दूरी पर स्थित है। अन्वेषणों द्वारा यहां 8 वीं ईसवीं का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिस पर हाथी का चित्र उकेरा हुआ है और उस पर सम्राट अशोक के उपदेश खुदे हुए हैं। चित्रशिल्प होने के कारण इसका नाम चित्रशिलालेख पड़ा। यह क्षेत्र सम्राट अशोक के लिए भी अत्यंत महत्व रखता था, शायद यही वजह थी कि भारत के प्राचीन एवं प्रसिद्ध नालन्दा व तक्षशिला शहरों की भाँति कालसी, कुलिन्द राज्य की राजधानी हुआ करती थी। चीनी यात्री हवेनसांग के लिए भी यह क्षेत्र सदैव शोध का विषय बना रहा क्योंकि उत्तर भारत में एकमात्र स्थान—कालसी गेट में अशोक के चतुर्दश शिला लेख के दर्शन होते हैं। इस स्थान का विशिष्ट महत्व है। प्रस्तर शिला पर उत्कीर्ण इन लेखों की भाषा प्राकृत एवं लिपि ब्राह्मी है।

जैसा कि विदित है, विश्व इतिहास व भारतीय इतिहास ग्रन्थों में जिन्हें महान की उपाधि से विभूषित किया गया है वे तीन विभूतियाँ हैं— 1—अशोक महान 2—सिकन्दर महान 3—अकबर महान। सम्राट अशोक, मौर्यवंश का तीसरा राजा था जिसका साम्राज्य सम्पूर्ण भारत और पश्चिमोत्तर में ईरान की सीमा तक फैला था।

कालसी में सम्राट अशोक के इस शिलालेख पर लोकहित में आन्तरिक प्रशासन के प्रति उनका दृष्टिकोण प्रजा के साथ नैतिक, आध्यात्मिक, पितृतुल्य संबंध, अहिंसा के लिए प्रतिबद्धता एवं युद्ध के परित्याग को दर्शाते हैं। इन कार्यों को करने के लिए अशोक ने निषेधात्मक नीतियों के साथ स्वयं को महिमामंडित करना तथा प्रयोगात्मक नीतियों में माता—पिता की सेवा, ब्राह्मणों एवं सन्यासियों को दान देना, मन की शुद्धता, आत्म—संयम, मित्रों—सम्बन्धियों, परिचितों, सेवकों एवं दासों के प्रति समभाव तथा धार्मिक विषयों पर आपसी सामंजस्य का उद्बोधन किया। उक्त नीतियों को लागू करने हेतु सम्राट अशोक ने शासकीय प्रयोगशाला में जानवरों के अनावश्यक बध पर प्रतिबंध, पशु एवं मानवों की चिकित्सा की व्यवस्था, समस्त प्राणियों के हित के लिए औषधीय वृक्षों को लगाने का कार्य तथा धर्म घोष द्वारा विषय उल्लेखनीय हैं।

कालसी में प्राचीन माँ भद्रकाली का मंदिर— कालसी गेट से एक कि०मी० की दूरी पर उत्तर दिशा में सड़क के किनारे प्राचीन माँ भद्रकाली की सिद्धस्थली है। माँ भद्रकाली के दर्शन व पूजा अर्चना करने से लोगों की मनौतियाँ पूर्ण होती हैं।

हनोल में श्री महासू देवता का प्राचीन भव्य मंदिर— कालसी—जौनसार बावर क्षेत्र का मुख्य प्रवेश द्वार से हनोल श्री महासू देवता का प्राचीन मंदिर लगभग 150 कि०मी० की दूरी पर चकराता त्यूनी मोटर मार्ग पर स्थित है जो राजधानी देहरादून से लगभग 200 कि०मी० की दूरी पर स्थित है और

महाराज के दर्शन एक दिन में आसानी से किये जा सकते हैं। इस क्षेत्र का कुलदेवता श्री महासू देवता का मुख्य व प्राचीन भव्य मंदिर है कुछ लोग श्री महासू देवता को महाशिव का ही गण मानते हैं क्योंकि स्थान काश्मीर से ही स्थान मैन्द्रथ (हनोल) में श्री महासू देवता शरीर रूप से नहीं बल्कि मूर्ति के रूप में प्रकट हुए थे। तात्पर्य यह है कि स्थान काश्मीर में भगवान शिव की तपोस्थली प्राचीन काल से ही रही है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि श्री महासू बोठा भी भगवान शिव का ही रुद्र अवतार हैं। इसी आस्था के साथ भगवान शिव से जोड़कर लोग उनके प्रति भाव व आस्था व्यक्त करते हैं। श्री महासू देव, महावसु का ही नाम है। जैसा कि हमारे हिन्दू धर्म एवं वेद-शास्त्रों के अनुसार तैंतीस कोटि, देवी देवताओं का वर्णन आता है। श्री महासू देवता भी उन्ही तैंतीस कोटि देवी देवताओं में से एक हैं समस्त जौनसार बावर के लोग भी श्री महासू देवता को अपना ईष्ट देवता मानते हैं। श्री महासू देवता चार भाई हैं जिनके नाम 1— श्री वासिक देव 2—श्री पवासिक देव 3—श्री बोठा महासू देव 4—श्री चालदा देव है इनकी माता का नाम माता देवलाड़ी माई था ये माता बटनेश्वरी के उपासक थे।



हनोल में यह एक अत्यंत सुंदर मंदिर है। मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण द्वापर युग में पाण्डवों ने विश्वकर्मा द्वारा करवाया गया था। मंदिर पर जो भी पत्थर लगे हैं उसका दुलान भीमसेन द्वारा घाटा पहाड़ यानी शिवालिक पहाड़ से किया गया है। यह मंदिर आज भी हनोल स्थान पर उतना ही सुंदर दिखता है जैसा कि पाण्डव काल में रहा होगा। मंदिर को बहुत ही सुंदर शैली में बत्तीस कोर्नर (कन्डारों) से बनाया गया है। मंदिर के ऊपर पत्थरों का जो गुम्बद बनाया गया है उसे भीम छत्तरी कहा जाता है।

कुछ लोगों के मतानुसार मैन्द्रथ स्थान में किरमिरी नाम का महाबली दैत्य राक्षस रहता था जो मानव एवं पशुओं के मांस का भक्षण करता था उस राक्षस से पूरा गाँव व आस पास के सभी लोग परेशान होने लगे। राक्षस के आतंक से परेशान होकर सभी लोगों ने मिलकर राक्षस से एक समझौता किया कि हम प्रतिदिन एक बकरा व भरपेट राशन तथा हर सात दिन के बाद एक आदमी खाने को देंगे। इसके लिए राक्षस शीघ्र ही तैयार हो गया। सभी लोगों ने आपस में तय किया कि प्रत्येक परिवार बारी-बारी राक्षस के भोजन की व्यवस्था करेगा और सप्ताह में प्रत्येक परिवार से एक आदमी की बारी आने लगी। उस परिवार में खूब रोना चिल्लाना होता था व मातम मनाया जाता था यह परिपाटी वर्षों तक चलती रही व धीरे-धीरे गाँव में आबादी घटने लगी।

मैन्द्रथ गांव में एक हुणा भाट नाम का ब्राह्मण भी रहता था उसकी स्त्री का नाम कैलावती (कैलाशी) था। उसके पास सात पुत्र थे जिसमें से छः पुत्र तो बारी-बारी से दैत्य की भेंट चढ़ चुके थे केवल एक पुत्र शेष बचा था। अब दोनों पति-पत्नी काफी वृद्ध हो चुके थे। परिवार में मात्र तीन लोग बचे थे और अगले माह फिर अंतिम पुत्र की बारी आने वाली थी। इसी सोच से वह पति-पत्नी सोने की तैयारी कर रहे थे तो हुणा भाट मन ही मन विचार कर रहा था कि अगली बारी पर उस दैत्य के भोजन के लिये मैं

किसे भेजूंगा। मैं स्वयं जाता हूँ तो मेरे बाद परिवार कौन पालेगा, लड़का तो अभी नादान है स्त्री को भेजता हूँ तो वंश ही समाप्त हो जायेगा, दोनों पति-पत्नी इसी सोच में डूबे थे कि हुणा भाट की पत्नी कैलावती के मुँह से अचानक एक चीख निकली— हे मासू! और वह बेहोश हो गई। उस बेहोशी की अवस्था में ही उसने स्वप्न में एक प्रकाश पुन्ज अपने पास देखा कि कश्मीर में महासू देवता रहते हैं। वह प्रकाश पुन्ज में उससे कहते हैं कि तुम अपने पति को हमारे पास भेज दो, हम मैन्द्रथ में आकर उस दैत्य को मार देंगे।

इस प्रकार चारों महासू देवताओं ने वृद्ध ब्राह्मण की दुःखों की दास्तान को सुनकर मैन्द्रथ में आने व राक्षस से छुटकारा दिलाने का अभयदान हुणा भाट को दे दिया और कहा कि हम तुम्हारे यहां अवश्य आयेगें। लेकिन शरीर रूप में नहीं बल्कि हम मूर्ति रूप में मैन्द्रथ में प्रकट होकर अपनी अलौकिक शक्ति से उस राक्षस का संहार करेंगे।

कालसी से 20 कि०मी० की दूरी पर यमनोत्री मोटर मार्ग के स्थान— खैरलानी से चकराता मसूरी मोटर मार्ग पर पड़ने वाले मुख्य स्थानों का विवरण इस प्रकार है— इस मार्ग पर सर्वप्रथम स्थान—लखवाड़ में महासू देवता का भव्य मंदिर है जिसका डिजाइन आई०आई०टी० रुड़की के माध्यम से तैयार किया गया था। इसी मंदिर से आगे दो कि०मी० की दूरी पर स्थान लखस्यार में चालदा महाराज का सुशोभित मंदिर है। इसी मंदिर स्थल से लगभग 10 किमी की दूरी पर नागथात के निकट स्थान बिसोई में महाराज महासू देवता का मंदिर काष्ठ पर नक्कासी द्वारा उकेरी गई कलाकृतियों से आकर्षक ढग से निर्मित किया गया है। नागथात से तीन कि०मी० की दूरी पर ही गढ़ विराट का किला है जो वर्तमान में खण्डहर की स्थिति में है। यहाँ से चकराता की दूरी लगभग 30 किमी होगी। जो देवदार, बांज, बुरांस के सुंदर वनों के लिए जाना जाता है। स्थान देववन, मुण्डाली, खडामा, लोखण्डी जहां चारों तरफ देवदार बुरांस बांज आदि के जंगल विद्यमान हैं। सर्द ऋतु में इन पहाड़ों पर बर्फ गिरती है तो वृक्ष भी बर्फ की सफेद चादर से ढके रहते हैं। इन मनोरम दृश्यों को देखकर समस्त पर्यटकों तथा ग्रामवासियों का मन प्रफुल्लित होने के साथ-साथ ऐसा लगता है कि मानो हम खुशियों के सागर में हिचकोले खा रहे हों। काफी लोग तो इसे मिनी स्विट्ज़रलैण्ड भी कहते हैं जिसके कारण उत्तराखण्ड राज्य के सभी निवासियों का सिर स्वाभिमान से ऊपर ऊठ जाता है। आस-पास, चारों ओर पूरे वर्ष भर हरियाली ही रहती है। सर्दियों में सभी पर्वत की ऊँची-ऊँची चोटियाँ बर्फ की चादर से माह मार्च व अप्रैल तक ढकी रहती हैं। जिसके कारण यहां का मौसम साफ रहने पर दिन के समय में जब सूर्य की रोशनी ऊँचे-ऊँचे पर्वतों पर पड़ती है तो ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से आकाशगंगायें यहीं उतर आयी हों। इसे संसार का स्वर्ग कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। चकराता मसूरी मोटर मार्ग से भी चकराता होते हुए त्यूनी हनोल के लिए आसानी से पहुँचा जा सकता है। तीसरा मार्ग यमनोत्री गंगोत्री मोटर मार्ग यमुना पुल, नैनबाग, डामटा, पुरोला, रंवाई रामासराई, मोरी होते हुए लगभग 200 कि०मी० की दूरी तय करते हुए हनोल मंदिर के दर्शन आसानी से कर सकते हैं। डामटा के निकट लाखामण्डल क्षेत्र स्थित है जहां कौरवों द्वारा लाक्षागृह का निर्माण, पाण्डवों को जलाकर मारने के लिए करवाया गया था।

श्री महासू देवता का जागड़ा (जागरण) वर्षभर में एक बार भाद्रपद की अमावस के बाद हरितालिका तीज यानी शुक्लपक्ष की तृतीया की रात को मनाया जाता है व अगले दिन शुक्ल पक्ष की चतुर्थी (गणेश चौथ) को देवता की पालकी जनता के देव दर्शन के लिए बाहर निकलती है इस दिन देश-विदेश से आये हुये सैलानी/पर्यटक तथा क्षेत्र के स्थानीय लोग हजारों की संख्या में एकत्र होते हैं और देवता महाराज के दर्शन आसानी से कर सकते हैं।



धन पशु



भास्करानन्द त्रिपाठी
सहायक लेखाधिकारी

अन्न के आँगन में, अब
ऊँचे आशियाँ बन चुके हैं,
प्रकृति के चतुर चितेरे भी, अब
माफिया बन चुके हैं।

लहलहाते खेतों में,
अनायास ही, उभर आये हैं
कंक्रीट के ऊँचे, ऊँचे शहर,
कोई कह नहीं पा रहा है
अरे, धन पशु !
जरा ठहर,
जरा ठहर।

माना कि,
शक्ति के हर गलियारे में,
तेरी भनक है,
माना कि
तेरी ऊँची आवाज में,
सोने और चाँदी की
मदभरी खनक है,
माना कि, तुझे अथाह
धन कमाने की सनक है,
मगर, बाहर मचा हुआ
हा—हा कार तो सुन!
बुलन्द अट्टालिका के नीचे
बेघर किसान की,
चीत्कार तो सुन !
याद है तुझे !
याद है तुझे कि, अन्न के बिना
अट्टालिका भी सूनी हो जाती है;
अपमानित, प्रकृति भी,
क्रोधविष्ट हो,
कभी—कभी, खूनी हो जाती है।
मानवता को समझ,
संयमित कर, अपना अंतर्मन
धन पशु, मत बन, मत बन।



खुशी



दीपा पंवार

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

चाय का कप लेकर आप खिड़की पर बैठे हों और बाहर के सुंदर नजारे का आनंद ले रहे हों... अरे चीनी डालना तो भूल ही गया..और तभी फिर से किचन में जाकर चीनी डालने में आलस आ गया....आप फीकी चाय को जैसे-तैसे पी गए, तभी आपकी नजर कप के तले में पड़ी बिना घुली चीनी पर पड़ती है....

हमारे जीवन में भी कुछ ऐसा ही है...सुख ही सुख बिखरा पड़ा है हमारे आसपास, लेकिन बिना घुली चीनी की तरह। हम सारी जिंदगी उस सुख को, उस खुशी को पाने के लिए भागते रहते हैं। इसी भागदौड़ में जीवन निकल जाता है। दरअसल खुशियां समेटने की यह जो दौड़ है, वही जीवन है। यह सफर ही जिंदगी का सफर है। खुशियां समेटते जाएं तो बहुत छोटा और छोड़ते जाएं तो बहुत लंबा। कहीं पढ़ा था, कि बिना खुशी जिंदगी, जिंदगी नहीं और जिंदगी नहीं तो कुछ भी नहीं। आज यथार्थ मालूम पड़ता है।



उस दिन देखा, चिलचिलाती गर्मी में हल्की बारिश हुई, तो गंदे कपड़ों में लिपटे न जाने कितने बच्चे गली में नाचने लगे, स्कूल में बेटी को उम्दा डांस के लिए अवार्ड मिला, तो पेशे से डांसर, जो एक पैर गंवा चुकी थी, बिना बैसाखी झूम उठी। जंग में बेटे की सलामती की खबर से बूढ़े मां-बाप के कलेजे को ऐसी ठंडक मिली कि एक दूसरे से लिपट गए। यह अहसास ही खुशी कहलाता है..... आत्मिक खुशी...कहीं किसी के आने की खुशी, तो कहीं कुछ पाने की खुशी.....कुछ खोने पर भी इस खुशी के इंतजार में खुशी।

वाट्सअप पर एक ऑडियो आया था, इस विषय के लिए सटीक लगता है मुझे। एक आदमी बड़ी खुशी के इंतजार में घर में खूब तैयारियां कर रहा है। तभी छोटी खुशी दरवाजे पर दस्तक देती है। वो अंदर से ही पूछता है..कौन है। छोटी खुशी जवाब देती है..मैं हूं खुशी, पर इतनी बड़ी नहीं, जिसका तुम्हें इंतजार है। मैं तो छोटी सी खुशी हूं। आदमी अंदर से ही जवाब देता है..मैं बड़ी खुशी के लिए तैयारियां कर रहा हूं, नहीं आ सकता। छोटी खुशी वापस चली जाती है। आदमी बड़े उत्साह से बड़ी खुशी का इंतजार करता रहता है, लेकिन वो नहीं आती। आदमी उदास हो जाता है, दुखी हो जाता है। बड़ी खुशी

के इंतजार में उसने छोटी खुशी के लिए भी दरवाजा नहीं खोला। हम भी कुछ ऐसा ही करते हैं। बड़ी खुशी के इंतजार में छोटी-छोटी खुशियों को नजरअंदाज कर देते हैं।

उम्र के एक पड़ाव पर पहुंच चुके लोग शायद मेरी इस बात से इत्तेफाक रखते हों कि खुशी कुछ और नहीं बल्कि हमारे मन का सुकून और संतुष्टि है। अगर दुखों में भी हम यह सोचें कि यह तो प्रकृति का चक्र है, सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख आता ही है, तो हमें तुलनात्मक रूप से कम परेशानी होगी। अपेक्षाएं जितनी कम होंगी, दुख उतना कम और सुकून उतना ज्यादा होगा। खुशी को हम तभी महसूस कर सकते हैं, जब हर दिन को आखिरी समझकर उसका लुत्फ उठाएं। परेशानी उठाने वाले हम अकेले कहाँ होते हैं, हमारे जैसे न जाने कितने लोग पूरी जिंदगी सुख का एक पल पाने की जुगत में लगे रहते हैं और चैन की नींद सोने के लिए उन्हें दवाइयों और बहुत बार नशे का सहारा लेना पड़ता है। खुद को मिले इस जीवन को प्रकृति का वरदान समझें और खुलकर हर खुशी का स्वागत करें, चाहे वह छोटी हो या बड़ी।

यूँ करें खुशी से मुलाकात

- दोस्तों से बात करना, किताबें लिखना-पढ़ना, खाना बनाना, बच्चों के साथ खेलना, किसी की मदद करना, मनपसंद खेल खेलना या कुछ भी ऐसा जो आपको खुशी दे, करना चाहिए।
- किसी के साथ हंसते-हंसते उतने ही हक से रुठने से, अपनों के आंसू पोंछने से, दोस्तों के दिल में रहने से, अपना किरदार पूरी ईमानदारी से निभाने से आत्मिक शांति पाई जा सकती है। खुशी अंदरूनी होगी, तो आत्मा को भी सुकून पहुंचाएगी।
- किसी पर गुस्सा आ रहा हो, तो माफ करना सीखें। गलती हो गई हो, तो माफी मांगना सीखें। इससे दिमाग से बड़ा बोझ कम होता है और राहें खुशनुमा हो जाती हैं। किसी शायर ने कहा है कि—

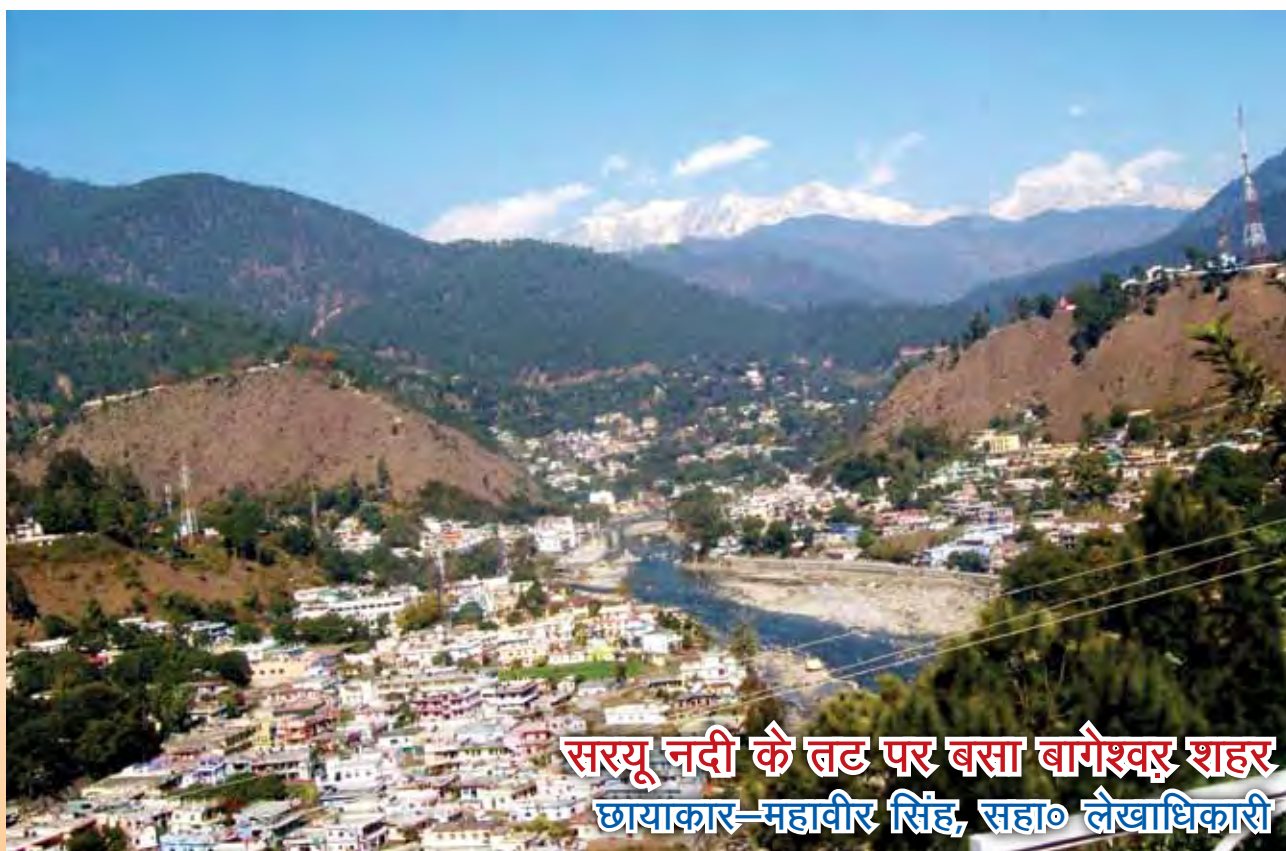
कुछ इस तरह से जिंदगी को मैंने आसां कर लिया
किसी से माफी मांग ली, किसी को माफ कर दिया

- जितना मिला हो, उसी में संतुष्ट रहें। मेहनत करना न छोड़ें, पर किस्मत से बैर न करें।
- कितने लोग ऐसे हैं जिनके पास पैसा नहीं था, लेकिन अपनी मेहनत के बल पर उन्होंने अपनी किस्मत को पलट दिया। एक टीवी शो में टीवी होस्ट रजत कपूर ने खुद बताया था कि वह इतने गरीब थे कि लोगों के यहां टीवी देखने जाया करते थे। आज लाखों लोग उन्हें टीवी पर देखते हैं। बॉलिवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन को कभी ऑल इंडिया रेडियो ने उनकी आवाज के लिए रिजेक्ट कर दिया था, आज वह किस मुकाम पर हैं, बताने की जरूरत नहीं है।
- इसलिए मन में सुकून रखें, शांति रखें, मेहनत करते रहें और सबसे जरूरी, ईश्वर पर यकीन रखें। जिंदगी में सिर्फ खुशियां ही होंगी।



“मानव का मानव होना ही उसकी जीत है, दानव होना हार है, और महामानव होना चमत्कार है।”

— डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन





उत्तराखण्डी शैली के घर, कुटि गाँव, पिथौरागढ़
छायाकार—किशोर सिंह कुटियाल, सहा० लेखाधिकारी



उत्तराखण्डी शैली के घर, खोला गाँव, पौड़ी
छायाकार—गणेश प्रसाद, सहा० लेखाधिकारी

थक गया हूँ मैं



चन्दन कुमार मिश्रा
लेखाकार

थक गया हूँ मैं हर दिन भाग-भाग कर,
थक गया हूँ मैं हर रात जाग-जाग कर।
भागता क्यों हूँ, मालूम नहीं,
शायद कुछ अरमान बाकी रह गए हैं,
या कुछ सपने अधूरे रह गए हैं।
और इन्हें पूरा करने की तमन्ना बाकी रह गयी है।
दूर हो गया हूँ मैं अपनों से, हर दिन भाग-भाग कर।
भूल गया हूँ मैं सब कुछ हर रात जाग-जाग कर।
दोस्तों का साथ वही है, रिश्तों का प्यार नहीं है।
अकेला ही सफर है, तन्हाइयों का डगर है।
अगर मिल भी जाए मंजिल तो भी ना मानेगा ये दिल।
सपने फिर भी रहेंगे अधूरे।
उम्मीदें फिर भी नहीं होंगे पूरे।
अब तो चाहत यही रह गई है।
कि काश बचपन लौट आए।
ताकि मैं कोई फिक्र न करूँ, हर रात जाग-जागकर।
और माँ मुझे अपनों हाथों से खिलाए भाग-भागकर।



“व्यक्ति की हानि, पीड़ा और चिन्ताएं, उसकी किसी आन्तरिक दुर्बलता के कारण होती हैं, उस दुर्बलता को दूर करके कामयाबी मिल सकती है।”

— स्वामी रामतीर्थ

अजब तेरी लीला गजब तेरी माया



रामबीर सिंह
वरिष्ठ लेखाधिकारी

मैं, कार्यालय महालेखाकार, उत्तर प्रदेश इलाहाबाद, में दो वर्ष की सेवा करने के पश्चात् माह नवम्बर 1985 में दीपावली का पर्व मनाने गृह निवास आया था। चूंकि मुझे अपनी पत्नी व बेटे को इलाहाबाद ले जाना था, इसलिए इलाहाबाद में राजरूपपुर जैसे पिछड़े इलाके में किराये के एक कमरे, किचन, बाथरूम का सेट की व्यवस्था करके आया था।

माता-पिता, भाई-बहन से अश्रुपूर्ण विदाई लेकर, दीपावली की छुट्टी बिताने के पश्चात् सपरिवार, संगम एक्सप्रेस ट्रेन में रात 9:15 पर सवार हो गया था। चूंकि मैं परिवार सहित पहली बार इलाहाबाद जा रहा था अतः माता-पिता व भाई ने बड़े जतन से गृहस्थी का सामान छः या सात कार्टन्स में रखकर ट्रेन में चढ़ा दिया था। 17 कि०मी० चलकर रात के 10 बजे ट्रेन खुर्जा सिटी पर पहुँची ही थी, कि घोषणा हुई कि जिस कोच में हम सहयात्रियों सहित सवार थे, उसमें तकनीकी गड़बड़ी आ गई है इसलिए वह आगे नहीं जायेगा।



अतः उस कोच के सभी यात्रियों से अनुरोध है कि वह पीछे वाले कोच में चढ़ जायें। कुछ ही देर में खुर्जा जंक्शन आने पर नये कोच में सवार हो जायें। सभी यात्री झटपट पीछे वाले कोच में सवार हो गये। मेरे पास सामान अधिक था। मैंने अपने ढाई वर्ष के बेटे और सामान को चढ़ाया ही था कि ट्रेन चल दी मैंने पत्नी को चढ़ाने का भरसक प्रयास किया, लेकिन असफल रहा। गाड़ी प्लेटफार्म से निकल चुकी थी। अमावस्या की रात का घनघोर अन्धेरा था। मैं, और पत्नी सदी की रात 11 बजे सुनसान प्लेटफार्म में अकेले रह गये थे। हम दोनों, बेटे की स्थिति और अपने को असहाय जान किसी अनहोनी की आशंका तथा कड़ाके की सर्दी में कांप रहे थे। हमें कुछ पलों तक कुछ समझ नहीं आया कि अब क्या करें लेकिन मेरी पत्नी ने ईश्वर से प्रार्थना की और मुझे भी साहस दिया कि प्रभु सब भला करेंगे, अपने ईष्ट-देव का ध्यान करें।

रात के अन्धकार में आसमान की ओर सिर उठाकर हमने आँखे बंदकर ईश्वर को नमन और प्रार्थना करने के बाद आँखे खुली भी नहीं थी कि मेरे बाये कंधे पर पीछे से किसी ने हाथ रखा जिससे मैं, भयभीत

और तन—मन के अंदर तक इतना कांप गया जैसे अचानक जमीन फटने पर कोई धरातल में समा गया हो। मैंने पलटकर पीछे देखा तो उस व्यक्ति ने बांयी ओर इशारा करके बताया कि देखो गाड़ी रुक गई है, आप जाओ और बिना डरे मन की सभी आंशकाओं को दूर कर गाड़ी में चढ़ जाइये। जब तक आप चढ़ नहीं जाओगे गाड़ी नहीं चलेगी। मेरी व पत्नी की आँखे फटी की फटी रह गई थी, लेकिन प्लेटफार्म से 200 मीटर दूर गाड़ी को रुकी देख उस व्यक्ति (स्टेशन उपअधीक्षक) को साक्षात् भगवान मानकर चरण स्पर्श किया और उसका धन्यवाद करते हुये, रात के अंधेरे में पटरी के किनारे पड़े पत्थरों पर गिरते — पड़ते गाड़ी के अंतिम कोच तक पहुँचे। कोच में सवार दो सज्जन पुरुषों ने हमें गाड़ी में चढ़ाया। गाड़ी में चढ़ते ही हमने बेटे को ढूँढा, अन्य यात्रियों से पूछा लेकिन बेटे का उस कोच में कहीं अता—पता नहीं था। दिल के टुकड़े को कोच में न पाकर, मेरी पत्नी का सब्र का बांध एक बार पुनः टूट गया और ऐसी अनहोनी जो घटित हो गई हो की आंशका से मेरा दिल भी भर गया था। हम दोनों की आँखों से अश्रुओं की धारा बह निकली। सह यात्री शनैः शनैः ढाढस बंधा रहे थे कि आपका बेटा यहाँ नहीं है। हमें पूरा विश्वास है कि वह न तो स्टेशन पर छूटा है और न ही गाड़ी के बाहर है। आपका बेटा आगे वाले कोच में जरूर मिल जायेगा, ईश्वर पर भरोसा रखो लेकिन हमारा हृदय उनकी बातों को अनसुना किये जा रहा था और दिल घबराहट के मारे बैठा जा रहा था। अपने बेटे की एक झलक देखने को बेचैन था। इतने में ही अगला स्टेशन अर्थात् खुर्जा जंक्शन आ गया था। हम गाड़ी से उतर कर बद—हबास स्थिति में आगे तक कई कोच देखते चले गये लेकिन बेटे का कहीं पता नहीं था। उस समय हमारी मनोस्थिति ऐसी हो रही थी जिसे भावनाओं में व्यक्त करना आज भी अपने मन को व्यथित करना लगता है। हमने पुनः ईश्वर को याद किया और रात 12 बजे स्टेशन की टिम—टिमाती रोशनी में एक महापुरुष की गोद में बेटे को रोते—बिलखते हुये सामने पाया। पत्नी ने उस महापुरुष की गोद से बेटे को ऐसे झपटकर छीना जैसे कोई घायल शेरनी शिकारी पर झपटी हो। पत्नी का यह रूप देखकर मैं स्तब्ध था। मन—ही मन कह रहा था कि हे पगली “यह व्यक्ति तो धन्यवाद का पात्र है। हमारे बेटे का शत्रु नहीं रक्षक है”, लेकिन पल भर में ही अहासास हुआ कि मैं ही मूर्ख हूँ जो यह नहीं समझ पा रहा था कि वह मेरी पत्नी ही नहीं अपितु वह तो निर्मल, निश्चल, सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार वह आत्मा है जिसे माँ, और सिर्फ माँ कहते हैं। कदाचित् वो माँ भी जिसे हम धरती माँ, गंगा माँ के नाम से भी जानते हैं जो सर्वथा अपनी गोद में, अपने जल प्रवाह में उन सभी महान पुरुषों के साथ साथ पापी, अधर्मी व्यभिचारी आदि को भी अपना जीवन निर्वाह करने, समान अवसर देकर प्रेम, करुणा, स्नेह प्रदान करते हुये शांत स्वभाव से सबका पालन पोषण करती है/सदा निश्चल बहती है। ऐसी माँ को शत्—शत् नमन्

खुर्जा जंक्शन पर गाड़ी 45 मिनट रुक कर चल दी और अलीगढ़, कानपुर, एवं फतेहपुर होते हुए अगले दिन सुबह इलाहाबाद पहुँच गई थी। रास्ते की उस घटना को एक दुःखद स्वप्न की भांति सोचकर आज भी तन—मन काँप उठता है लेकिन ईश्वर की असीम कृपा से बेटा हमारे पास है। हमारे ऊपर की गई उस कृपा दृष्टि के लिए परम्—पिता परमेश्वर का कोटि—कोटि धन्यवाद करते हुए बरबस ही मुख से निकल जाता है ‘अजब तेरी लीला—गजब तेरी माया’।



“श्रद्धा और विश्वास ऐसी जड़ीबूटियाँ हैं जो एक बार घोल कर पी लेता है वो चाहने पर मृत्यु को भी पीछे धकेल देता है।”

— अमृतलाल नागर

“सरकारी तंत्र में कम्प्यूटरीकरण” एक विश्लेषणात्मक अध्ययन



प्रवीन कुमार मिश्रा
लेखाकार

आज के इस वैज्ञानिक युग में जब कोई भी तकनीक, कोई भी नई योजना, या कोई नई पद्धति किसी भी कार्यालय में व्यापक रूप से लागू की जाती है तो उसके कुछ निकटवर्ती परिणाम (त्वरित परिणाम) आते हैं और कुछ समय बाद कुछ दूरगामी परिणाम सामने आते हैं। आइये इन परिणामों का विश्लेषण करने के लिए हम एक उदाहरण लेकर चर्चा करते हैं। व्यापारिक बैंकों का उदाहरण लेते हैं और देखते हैं कि किस प्रकार बैंकों में कम्प्यूटरीकरण लागू हुआ और उसके क्या-क्या त्वरित परिणाम आए एवं क्या-क्या दूरगामी परिणाम सामने आ रहे हैं?

बैंकों में जैसे-जैसे कम्प्यूटरीकरण लागू किया गया वैसे-वैसे बैंकों का काम तो दिन प्रतिदिन आसान होता चला गया, गणनाएं करना आसान हो गया, ग्राहकों को अधिक से अधिक सुविधाएं मिलने लगीं, काम त्वरित ढंग से होने लगा, एकल खिड़की प्रावधान हो गया (एक ही स्थान पर ग्राहक सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त कर सकता है, जबकि पहले उसे पैसा जमा करने के लिए अलग कतार में लगना पड़ता था, पैसा निकालने के लिए अलग कतार में लगना पड़ता था, बैंक ड्राफ्ट के लिए अलग कतार में लगना पड़ता था), ए.टी.एम. (ऑटोमेटिक टेलर मशीन) की सुविधा प्राप्त होने लगी, जिसके द्वारा ग्राहक कहीं से भी पैसे का लेन-देन कर सकते हैं। यही नहीं बहुत सी ऐसी सुविधाएं ग्राहकों को प्राप्त हुई हैं, जो कम्प्यूटरीकरण के बिना शायद कभी सम्भव न हो पाती। ये सभी कम्प्यूटरीकरण के त्वरित परिणाम थे जो कम्प्यूटरीकरण होने के कुछ समय में ही हमारे सामने आए।



अब हम कम्प्यूटरीकरण के कारण आए दूरगामी परिणामों पर नजर डालते हैं। बैंक ही वह संस्थान है, जहां सबसे पहले वी0आर0एस0 (स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति) योजना लागू की गई। जब स्थितियाँ इससे नहीं संभली तो वी0आर0एस0 का स्थान सी0आर0एस0 (अनिवार्य सेवा निवृत्ति) ने ले लिया जिसमें बैंक कर्मियों को अनिवार्य रूप से सेवा निवृत्ति से पहले ही सेवा निवृत्त किया जाने लगा। जब स्थितियाँ और भी गम्भीर हो गईं तो बी0एस0आर0बी0 (बैंकिंग सर्विसेस रिक्रूटमेंट बोर्ड), जो कि बैंकों में समूह 'ग' वर्ग

की भर्तियां करने की एक संस्था थी) को ही भंग कर दिया गया। पिछले 10 वर्षों में बैंकिंग संस्थानों में कर्मचारियों की संख्या में उत्तरोत्तर कमी आने लगी, जिसको ध्यान में रखते हुए पुनः आई0बी0पी0एस0 भर्ती संस्थान का गठन किया गया। ये हैं कम्प्यूटरीकरण के दूरगामी परिणाम जो कि कुछ ही वर्षों में पूर्ण कम्प्यूटरीकरण के कारण सामने आए।

क्या अपने यहाँ गहन अध्ययन व उचित परिस्थितियों के बिना ही हमने जो पूर्ण कम्प्यूटरीकरण लागू किया उससे समस्त परिदृश्य के मूल में स्थित मानवीय संसाधन की तकनीकी के आगे उपेक्षा नहीं की जा रही है? यदि हम इसे और विस्तृत रूप से देखना चाहते हैं तो हमें भारत और अमेरिका जैसे पश्चिमी देशों में देश, काल व परिस्थितियों को साथ-साथ देखना होगा।

1. एक तरफ अमेरिका पूर्ण कम्प्यूटरीकरण देश है तो दूसरी तरफ भारत कम्प्यूटरीकरण के मध्यम दौर से गुजर रहा है।
2. अमेरिका की जनसंख्या भारत के एक प्रदेश की जनसंख्या के बराबर है। कम्प्यूटरीकरण के कारण बढ़ती बेरोजगारी हमारे देश की इतनी बड़ी जनसंख्या के एक खतरनाक स्थिति बनती जा रही है।
3. साइबर क्राईम (कम्प्यूटर अपराध) : पूर्ण कम्प्यूटरीकरण के कारण कम्प्यूटर से जुड़े अपराध जैसे किसी ग्राहक के ए0टी0एम0 से पैसे चुरा लेना, किसी अन्य व्यक्ति की समस्त गुप्त सूचनायें चुरा लेना इत्यादि। नई कम्प्यूटर पद्धतियों को लागू करने से पहले उनका पूर्ण प्रशिक्षण के अभाव में होने वाले खतरों को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। जनसामान्य को होने वाली आर्थिक हानियां इसी कड़ी में एक कदम है।
4. साइबर पोल्यूशन (कम्प्यूटर प्रदूषण) : कम्प्यूटरीकरण के कारण अत्यधिक मात्रा में ऐसे अवशिष्ट पदार्थ प्राप्त होते हैं, जो हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक हानिकारक हैं। यही नहीं कम्प्यूटर से निकलने वाली किरणें भी हमारे शरीर को, आँखों को, हृदय को, मस्तिष्क को हर तरह से हानि पहुँचाती हैं।
5. साइबर लॉ (कम्प्यूटर से संबंधित अधिनियम) : हमारे देश की सरकार ने आज के युग में बढ़ते कम्प्यूटरीकरण के कारण कुछ नियम व अधिनियम बनाए हैं, जिनका पालन हर कम्प्यूटर रखने वाला संस्थान करने के लिए बाध्यकारी होगा। यहीं नहीं यह उन सामान्य व्यक्तियों पर भी लागू होता है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कम्प्यूटर से जुड़े हैं। इन अधिनियमों का प्रमुख उद्देश्य कम्प्यूटर जगत में हो रहे अपराधों को रोकना है।

विश्लेषण करने से यह ज्ञात होता है कि हमने छोटी-छोटी समस्याओं जैसे ग्राहकों को अच्छी सुविधाएं प्रदान करना, सम्पूर्ण लेखे-जोखे को कागज से सिलिकान चिप में एकत्रित करना, बैंकिंग सुविधाओं को और तरलता प्रदान करना इत्यादि कार्य कर लिए हैं, पर विशाल जनसंख्या वाले देश में कम्प्यूटरीकरण के कारण बेरोजगारी की भयंकर समस्या को हल करने के लिए सॉफ्टवेयर कहाँ से विकसित करेंगे, इस बात का विचार गहराई से नहीं किया है। एक बात और जो इस विश्लेषण से सामने आती है वो ये है कि जिस प्रकार हमारे वर्तमान माननीय प्रधानमंत्री ने विगत 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया, इनकी गिनती भारतवर्ष के उन प्रधानमंत्रियों में होती है जो विज्ञान और तकनीकी के प्रबल समर्थक हैं, फिर भी उन्होंने मानवीय संसाधन के विकास पर भी साथ-साथ ध्यान केंद्रित किया है। उसी प्रकार

हमें आज के वैज्ञानिक युग में पूर्ण कम्प्यूटरीकरण करते समय ये बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि सभी योजनाओं, सभी सफलताओं के मध्य में (कोर में) छिपे हुए मानवीय संसाधन (ह्यूमन रिसोर्स) की हमें अनदेखी नहीं करनी चाहिए। राष्ट्र के समग्र विकास के लिए हमें मानवीय संसाधन को केंद्र में रखकर आधुनिक कम्प्यूटरीकरण पद्धति को चरणबद्ध तरीके से परिस्थितियों के अनुसार लागू करने की आवश्यकता है। डिजिटल इण्डिया के इस युग में कहीं राष्ट्र के मानवीय संसाधन की अनदेखी न हो जाये, इस बात का ध्यान हर चरण में रखना होगा। मानवीय संसाधन के विकास के बिना राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है।



“कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य को दास नहीं बनाता, केवल धन का लालच ही मनुष्य को दास बनाता है।”

— पंचतंत्र

“मन एक भीरु शत्रु है, जो सदैव पीठ के पीछे वार करता है।”

— मुंशी प्रेमचंद

ब्रेकिंग न्यूज़



गणेश प्रसाद
सहायक लेखाधिकारी

एक तो—टीवी चैनलों की भरमार

दूजे—कवरेज अपरम्पार,
सासु माँ आँखें दिखाए
बहू पलटकर होंठ बिचकाए
छुटकी इठलाए—मेंहदी लगाए,
आखिर इतना क्यूँ शर्माए.....?
समझ न आए
बेटा मंद—मंद मुस्काए
प्रॉपर्टी पर आँखें गड़ाए
बापू ! कब का है प्रोग्राम.....?
वसियत कर क्यूँ नहीं देते मेरे नाम ।
सोच—सोच बेचैन होता जाता
कल का जाता बुढ़ऊ
आज फुर क्यूँ नहीं हो जाता ।



आखिर! क्यूँ झेलूँ सास—बहू की तकरार,
या झेलूँ कई एपिसोड बाद छुटकी का दीदार
इन चैनल वालों के पास क्या... नहीं कोई डॉक्टर कम्पीटेंट
जो लगा दे बुढ़ऊ की कनफोडू खांसी पर ढक्कन परमानेंट ।
टैण.....टैणा.....
क्यूँ? अभी से हो गये कन्प्यूज़ !
अरे भैया ! यही तो है ब्रेकिंग न्यूज़

पुल का उद्घाटन

मंत्री—संत्री टनाटन,
नेता जी भाषण दिए जा रहे हैं
मजबूती के कसीदे पढ़े जा रहे हैं
जनता को बेवजह पकाए जा रहे हैं
ठेकेदार चूना लगाए जा रहे हैं

मीडिया वाले बौराए जा रहे हैं
और जेब कतरे चुपचाप अपना धर्म निभाए जा रहे हैं.....
कि तभी.....मजदूर का बच्चा
मासूम सा सच्चा— फिसल कर,
नदी में गिर गया — कोहराम मच गया.....
कौन कूदे.....? मानो सांप सूँघ गया.....
और इस रेलम—पेल में — भाषण के खेल में,
नेता जी का फोन — विद लेटेस्ट रिंग टोन
नदी में गिरता चला गया और
स्लो मोशन में कैप्चर होता चला गया।

बच्चे के बचने की आस टूट गई
चमचों में पहले कूदने की होड़ मच गई
तर्क भी कैसा — बच्चों का क्या.....?
वे तो गिरने के लिए ही पैदा होते रहेंगे
पर हमें ऐसे मौके बार—बार थोड़े न मिलेंगे
गुमसुम सा खड़ा सोचता—मीडिया को कोसता
पहले बच्चे की या फोन की न्यूज़.....?
टैण.....टैणा.....
मत हो कन्फ्यूज़.....
अरे भैया ! स्लो मोशन वाली क्लिप ही बनेगी ब्रेकिंग न्यूज़

विदेशी मेहमान का आगमन

प्रशासनिक व्यवस्था चाक—चौबंद,
पलक पाँवड़े बिछाए आला अफसर
खड़े टकटकी लगाये असीम नभ पर।

ब्रेकिंग न्यूज़.....

संवाददाता — कुछ ही मिनटों में विमान लैण्ड करने वाला है।

चैनल हैड चिल्लाया— टायर और रनवे का संगम
पहले हमारे ही चैनल पर होगा कितना विहंगम।
खुजियाना बंद करो—वहीं डटे रहो, किन्तु.....
अपनी बिरादरी वालो से.... थोड़ा कटे रहो।
तभी विमान उतर गया— मीडिया में जान फूंक गया।

ब्रेकिंग न्यूज़.....

संवाददाता — कुछ ही पल में विमान का दरवाजा खुलने वाला है ।

चैनल हैड चिल्लाया— मेहमान के कदम और पायदान का संगम
पहले हमारे ही चैनल में होगा कितना विहंगम ।
लॉन्ग शॉट को छोड़ो— कदमों पर फोकस जमाओ
धक्का दो, कपड़े फाड़ो या कोहनी मारो
टी0 आर0 पी0 कैसे भी उछले,..... ऐसी फोटो उतारो ।

मेहमान धीरे-धीरे विमान से उतर गये
मुस्तैदी से अफसरों ने उन्हें पुष्प गुच्छ भेंट किये,
शिष्टाचार का अदान-प्रदान हुआ— माहौल और भी खुशगवार हुआ

ब्रेकिंग न्यूज़.....

संवाददाता — दायीं तरफ या बायीं तरफ — आखिर कहां बिठाएंगे, क्योंकि.....
अगला सफर मेहमान.....लम्बी गाड़ी में ही तय करके जायेंगे ।

चैनल हैड चिल्लाया — अबे दायें बायें की छोड़
गाड़ी की ओर दौड़
हाथ मलता रह जायेगा
क्या मेरा बैण्ड बजवायेगा.....?

दोस्तों! हालात की गम्भीरता, सार्थकता,
संवेदनशीलता, सत्यता या प्रमाणिकता की किसको है पड़ी
जिधर भी देखो झूठ, स्वार्थ, फरेब और जुगाड़ की है रेलम पेल मची
फिर क्यों चैनल बदल-बदल कर.....?
बेसब्री से करवटें बदल-बदल कर हो रहे हो कन्फ्यूज
उमड़-उमड़ कर तैर रहे..... सभी चैनलों पर यही व्यूज ।
अरे भैया ! बदस्तूर झेलते रहिए
टैण.....टैणा.....
ब्रेकिंग न्यूज़.... ब्रेकिंग न्यूज़.... ब्रेकिंग न्यूज़.....!



“हम प्रयास के लिए उत्तरदायी हैं, न कि परिणाम के लिए।”

— भगवत गीता

हिंदी सप्ताह-2014 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत प्रतिभागियों का संक्षिप्त विवरण

क्रमांक	विधा	स्थान	नाम
			सर्व / श्री / श्रीमती / सुश्री
01	टंकण	प्रथम	नीरज नेगी (संविदाकर्मी)
		द्वितीय	नितिन भारती (संविदाकर्मी)
		तृतीय	रचना पंवार (संविदाकर्मी)
02	मसौदा लेखन	प्रथम	अविनाश रंजन, सहा० लेखाधिकारी
		द्वितीय	अमित कुमार साहू, लेखाकार
		तृतीय	अजय कुमार पाल, लेखाकार
03	वर्णानुक्रम	प्रथम	दिव्यांशु श्रीवास्तव, लेखाकार
		द्वितीय	i) पूर्णिमा चटर्जी, वरि० लेखाकार ii) प्रियंका लिलहोरी, लेखाकार iii) अजय कुमार पाल, लेखाकार
		तृतीय	प्रवीण कुमार मिश्रा, लेखाकार
04	अनुवाद	प्रथम	रीता नेहरु, वरि० लेखाकार
		द्वितीय	पूर्णमा चटर्जी, वरि० लेखाकार
		तृतीय	सी पी अरुण कुमार, वरि० लेखाकार
05	शब्द सामर्थ्य	प्रथम	रीता नेहरु, वरि० लेखाकार
		द्वितीय	i) संजय कौल, वरि० लेखाकार ii) मधुमिता मुखर्जी, लिपिक
		तृतीय	i) सी पी अरुण कुमार, वरि० लेखाकार ii) पूर्णिमा चटर्जी, वरि० लेखाकार
06	कार्टून के माध्यम से अभिव्यक्ति	प्रथम	अमित कुमार साहू, लेखाकार
		द्वितीय	शोभा सेमवाल, (संविदाकर्मी)
		तृतीय	नीरज नेगी, (संविदाकर्मी)
07	त्वरित अभिव्यक्ति	प्रथम	भास्करानन्द त्रिपाठी, सहा० लेखाधिकारी
		द्वितीय	सुशील देवली, सहा० लेखाधिकारी
		तृतीय	i) प्रवीण कुमार मिश्रा, लेखाकार ii) दीपक कुमार, सहा० लेखाधिकारी
08	वित्तीय वर्ष 2013-14 दौरान हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारी	प्रथम	जवाहर सिंह राणा, वरि. लेखाकार
		द्वितीय	शैलेन्द्र साहू, लेखाकार
		तृतीय	पूर्णमा चटर्जी, वरि. लेखाकार
09	वित्तीय वर्ष 2014-15 दौरान हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले चयनित कर्मचारी	प्रथम	अनुराग मिश्रा, लेखाकार
		द्वितीय	उमाशंकर, वरिष्ठ लेखाकार
		तृतीय	अजय कुमार पाल, लेखाकार

वर्ष 2014-15 दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाण पत्र तथा नगद पुरस्कार पाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का सक्षिप्त विवरण

प्रमाण पत्र तथा नगद पुरस्कार पाने वाले अधिकारी और कर्मचारीगण

क्रमांक	नाम तथा पदनाम
	सर्व/श्री/श्रीमती/सुश्री
1.	रामबीर सिंह, वरि० लेखाधिकारी
2.	जगदीश प्रसाद, वरि० लेखाधिकारी
3.	के सी जोशी, सहा० लेखाधिकारी
4.	महाबीर सिंह, सहा० लेखाधिकारी
5.	आर एस नेगी, वरि० लेखाकार
6.	पूर्णमा चटर्जी, वरि० लेखाकार
7.	सुनील कौल, वरि० लेखाकार
8.	रश्मि श्रीवास्तव, वरि० लेखाकार
9.	राकेश चंद पाण्डेय, लेखाकार
10.	दीपक साहा, लेखाकार
11.	मनीष रंजन, लेखाकार
12.	देव चंद, डाटा एंट्री ऑपरेटर
13.	गौरव कुमार गौतम, डाटा एंट्री ऑपरेटर
14.	मनीष कनोजिया, बहुकार्य कर्मी
15.	शिवांगी, बहुकार्य कर्मी
16.	प्रशांत जोशी, बहुकार्य कर्मी
17.	हयात सिंह, बहुकार्य कर्मी

प्रमाण पत्र पाने वाले अधिकारी और कर्मचारीगण

क्रमांक	नाम तथा पदनाम
	सर्व/श्री/श्रीमती/सुश्री
1.	एस० एस० पल्लवाल, वरि० लेखाधिकारी
2.	अमरजीत सिंह, वरि० लेखाधिकारी
3.	विनोद कुमार शर्मा, वरि० लेखाधिकारी
4.	एच० पी० सिंह, लेखाधिकारी
5.	डी० सी० बंस्वाल, सहा० लेखाधिकारी
6.	इफतेकार अहमद, सहा० लेखाधिकारी
7.	विजय चौहान, सहा० लेखाधिकारी
8.	मनीष कुमार सिन्हा, सहा० लेखाधिकारी
9.	के० एस० कुटियाल, सहा० लेखाधिकारी
10.	नवीन त्रिपाठी, सहा० लेखाधिकारी

विभिन्न खेलकूद क्रिड़ाओं एवं गतिविधियों में विलक्षण उपलब्धियाँ प्राप्त करने वाले कार्यालय के प्रतिभागियों का संक्षिप्त विवरण

श्रीमती शिखा खण्डूरी, वरि० लेखाकार

1.	क) सीनियर मास्टर्स नेशनल बैडमिंटन चैम्पियनशिप प्रतियोगिता 2014-15 (महिला) वर्ग का आयोजन धर्मशाला, (हिमाचल प्रदेश) में कराया गया। जिसमें श्रीमती खण्डूरी ने महिला सिंगल (40+वर्ग) इवेंट में दूसरा स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में उनके प्रदर्शन के आधार पर उनका चयन माह सितम्बर में दिनांक 20.09.2015 से 26.09.2015 तक स्वीडन (हैल्सिंबोर्ग) में आयोजित होने वाली वर्ल्ड मास्टर्स बैडमिंटन चैम्पियनशिप हेतु भारतीय महिला वर्टन टीम में किया गया।	 श्रीमती शिखा खण्डूरी, वरि० लेखाकार
	ख) सी०जी०ई०डब्लू०सी०सी० (आर०एस०बी०) द्वारा अखिल भारतीय सिविल सर्विसेज बैडमिंटन प्रतियोगिता 2014-15 का आयोजन एस०डी०ए०टी० जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम चेन्नई तमिलनाडु में कराया गया। जिसमें श्रीमती खण्डूरी, वरि० लेखाकार एवं सुश्री नीरू राणा, लेखाकार ओपन महिला युगल (40+ वर्ग) में विजेता हुईं तथा टीम महिला वर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया।	
2.	क) सी० जी० ई० डब्लू० सी० सी० क्रिकेट प्रतियोगिता 2014-15 का आयोजन भारतीय सर्वेक्षण विभाग देहरादून द्वारा सर्वे स्टेडियम देहरादून में कराया गया जिसमें 12 टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के फाइनल मैच में कार्यालय महालेखाकार उत्तराखण्ड की टीम ने आई०आई०पी० की टीम को 7 विकेट से हराकर विजय प्राप्त की। जिसमें श्री सन्नी राणा, लेखाकार ने ऑल राउण्ड प्रदर्शन करते हुए 6 मैचों में 17 विकेट लिये एवं 85 रन बनाये।	 श्री सन्नी राणा, लेखाकार 
	ख) श्री संजीव जखमोला, वरि० लेखाकार ने 6 मैचों में 155 रन 04 अवजीवित पारीयों सहित बनाये। जो टीम की तरफ से सर्वाधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे।	 श्री संजीव जखमोला, वरि० लेखाकार
3.	श्री रोहित रतूड़ी, लेखाकार क) भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग अंतर क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता 2014-15 का आयोजन कार्या० महा० (लेखा एवं हक०) छत्तीसगढ़ रायपुर, द्वारा कराया गया। जिसमें श्री रतूड़ी एकल प्रतिस्पर्धा सिंगल्स वर्ग में उपविजेता रहे। ख) जिला बैडमिंटन एसोसिएशन देहरादून द्वारा परेड ग्राउण्ड में आयोजित 15 पलाई पावर जूनियर व सीनियर उत्तराखण्ड राज्य बैडमिंटन चैम्पियनशिप 2015-16 में श्री रतूड़ी डब्ल्स में उपविजेता रहे। ग) बैडमिन्टन एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की ओर से नोर्थ जोर्न इण्डिया बैडमिन्टन चैम्पियनशिप 2015 हरिद्वार में आयोजित करायी गयी, जिसमें श्री रतूड़ी उपविजेता रहे।	 श्री रोहित रतूड़ी, लेखाकार

घ)	भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा ग्रेड ए0आर0सी0 ऑडिटेरियम हॉल हाथी बड़कला स्टेट सर्वे ऑफ इण्डिया, देहरादून में आयोजित सी0जी0ई0डब्लू0सी0सी0 टेबल टेनिस प्रतियोगिता 2014-15 में श्री अरुण ठाकुर, वरि0 लेखाकार तथा श्री राकेश कुमार, लेखाकार पुरुष वर्ग के विजेता रहे।	 श्री अरुण ठाकुर, वरि० लेखाकार	 श्री राकेश कुमार, लेखाकार
ड़)	श्री जीवन सिंह सांमत, वरि० लेखाकार को मुख्यालय द्वारा पवेलियन ग्राउण्ड, देहरादून में आयोजित जिप्सी गोल्ड कप ऑल इण्डिया फुटबाल प्रतियोगिता 2014-15 हेतु सी0ए0जी0 फुटबाल टीम का मैनेजर एवं चयनकर्ता नियुक्त किया गया। इस खेल प्रतियोगिता में उक्तांकित टीम ने विजय प्राप्त की।	 श्री जीवन सिंह सांमत, वरि० लेखाकार	
4.	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड द्वारा मल्टीपरपज हॉल कौलागढ़, दे०दून में आयोजित सी0जी0ई0डब्लू0सी0सी0 बैडमिंटन प्रतियोगिता 2014-15 का आयोजन कराया गया। जिसमें :- क) पुरुष एकल प्रतियोगिता में श्री अभिषेक अग्रवाल, लेखाकार विजेता रहे। ख) युगल प्रतियोगिता में सर्वश्री रतूड़ी तथा अग्रवाल विजेता रहे। ग) मिश्रित युगल में श्री रतूड़ी तथा सुश्री नीरू राणा, लेखाकार विजेता रहे। घ) महिला युगल प्रतियोगिता में श्रीमती शिखा खण्डूरी, वरि० लेखाकार तथा सुश्री राणा, लेखाकार विजेता रहीं।	 श्री अभिषेक अग्रवाल, लेखाकार	 सुश्री नीरू राणा, लेखाकार
5.	कार्यालय के लेखा मनोरंजन क्लब द्वारा दिनांक 26.08.2015 तथा 27.08.2015 को कैरम प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसे दो वर्गों, नियमित खिलाड़ी तथा अनियमित खिलाड़ी, में बाँटा गया। नियमित खिलाड़ी पुरुष वर्ग में श्री पुष्पेन्द्र, वरि० लेखाकार विजयी रहे। अनियमित खिलाड़ी महिला वर्ग में सुश्री शालू तथा सुश्री चेताली, बहुकार्यकर्मी विजयी रहीं तथा पुरुष वर्ग में श्री सोमप्रकाश, बहुकार्यकर्मी विजयी रहे।		
  			

वर्ष 2014-15 शैक्षिक सत्र के दौरान हाई स्कूल/इंटरमीडिएट परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले होनहार छात्रों का संक्षिप्त विवरण

बोर्ड: आई सी एस ई (कक्षा-10) वर्ष-2015

विद्यालय	राजा राम मोहन रॉय अकादमी, देहरादून	
छात्र/छात्रा का नाम	नबोनिता मुखर्जी	
पिता का नाम	स्व० श्री ज्योतिर्मोय मुखर्जी	
माता का नाम	श्रीमती मधुमिता मुखर्जी	
अंक प्राप्त किये (प्रतिशत में)	86%	

बोर्ड: आई सी एस ई (कक्षा-10) वर्ष-2015

विद्यालय	ऑल सेंट्स कॉन्वेंट स्कूल, टिहरी	
छात्र/छात्रा का नाम	सुष्मिता राणा	
पिता का नाम	स्व० श्री सुबेल सिंह राणा	
माता का नाम	श्रीमती राधा राणा	
अंक प्राप्त किये (प्रतिशत में)	82.6%	

बोर्ड: आई सी एस ई (कक्षा-10) वर्ष-2015

विद्यालय	माउंट फोर्ट अकादमी, देहरादून	
छात्र/छात्रा का नाम	रुचिका राणा	
पिता का नाम	श्री राम सिंह राणा	
माता का नाम	श्रीमती कुमी राणा	
अंक प्राप्त किये (प्रतिशत में)	81.2%	

बोर्ड: सी बी एस ई (कक्षा-10) वर्ष-2015

विद्यालय	यूनिवर्सल अकादमी, देहरादून	
छात्र/छात्रा का नाम	बृष्टि रावत	
पिता का नाम	स्व० श्री राज रावत	
माता का नाम	श्रीमती बीना रावत	
अंक प्राप्त किये (प्रतिशत में)	80%	

अंग्रेजी शब्दों के सरल तथा उपयुक्त हिंदी शब्द

संकलनकर्ता

श्री विनोद कुमार शर्मा

वरिष्ठ लेखाधिकारी

Amended draft	संशोधित मसौदा / प्रारूप
Analogous	सदृश / एक-सा मामला
Annexure to this letter	इस पत्र से अनुलग्न
Antedated cheque	पूर्व दिनांकित चैक / आगे की तारीख का चैक
Base year	आधार वर्ष
Binding agreement	बंधनकारी करार
Body corporate	निकाय
Bonafide	वास्तविक / असली
Calendar year	पंचांग वर्ष
Calling attention	ध्यानाकर्षण / ध्यान आकर्षित करना
Calls in arrears	बकाया मांग
Cancellation allotment	आबंटन रद्द करना
Daily allowance	दैनिक भत्ता
Date of arrival	आगमन तारीख
Day to day work	नित्यप्रति का कार्य
Dearness allowance	मंहगाई भत्ता
Death-cum-retirement gratuity	मृत्यु तथा निवृत्ति उपदान
Earmarked funds	चिन्हित निधि
Earnest money	बयाना
Economy measures	मितव्यय / किफायत के उपाय
Effective control	प्रभावी नियन्त्रण
Face value	अंकित मूल्य
Factual data	तथ्यपूर्ण आधार सामग्री
Facsimile signature	प्रतिकृति हस्ताक्षर / अनुलिपि हस्ताक्षर
Fair Price	उचित मूल्य
General Meeting	साधारण सभा / बैठक
General Secretary	महासचिव
Good faith	सद्भाव
Habitual offender	आदतन अपराधी
Half yearly Inspection	अर्द्धवार्षिक निरीक्षण
Handover change	कार्यभार सौंपना
I agree	मैं सहमत हूँ
I am directed to	मुझे निर्देश हुआ है कि
I beg to submit	निवेदन है कि
Joining date	कार्यग्रहण तारीख
Joining report	कार्यग्रहण रिपोर्ट
Joining time	कार्यग्रहण अवधि

Land record	भू-अभिलेख
Land Revenue	भू-राजस्व
Lapsed sanction	व्यपगत मंजूरी
Maintenance allowance	निर्वाह भत्ता
Maintenance of building	इमारत का अनुरक्षण
Major Head	मुख्यशीर्ष
Name plate	नाम-पट्ट
National anthem	राष्ट्रीय-गीत
National Income	राष्ट्रीय आय
Objection statement	आपत्ति विवरण
Obliged to answer	उत्तर देने के लिए बाध्य
Observance of rule	नियम पालन
Package Proposal	एकमुश्त प्रस्ताव
Paid apprentice	सवेतन शिक्षु
Paid articles	दत्त वस्तुएं
Qualified acceptance	सशर्त स्वीकृति
Qualified candidate	योग्य उम्मीदवार
Qualifying service	अर्हक सेवा
Raising of Loans	उधार लेना
Rate contract	दर संविदा
Rate of Exchange	विनिमय दर
Safety device	सुरक्षा साधन
Salaried class	वेतन भोगी वर्ग
Sale deed	बैनामा
Table of contents	विषय सूची
Tacit acceptance	मौन स्वीकृति
Tag these papers	कागजों को नत्थी कर दें
Ultimate analysis	अंतिम विश्लेषण
Ultimate destinate	अंतिम गंतव्य स्थल
Unacceptable to me	मुझे अस्वीकार्य
Vacant post	रिक्त पद
Vacation pay	अवकाश वेतन
Vague idea	अस्पष्ट विचार
Waiting list	प्रतीक्षा सूची
Waived his rights	अपने अधिकार छोड़ दिए
Waive recovery	वसूली छोड़ देना
Yield table	उपज सारणी
Youth conference	युवक सम्मेलन
Yarely	शीघ्रता से
Zonal council	आंचलिक परिषद
Zonal office	आंचलिक कार्यालय
Zoological garden	प्राणि उद्यान, चिड़ियाघर

हिंदी सप्ताह समारोह-2014 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की कुछ जीवंत झलकियाँ



महालेखाकार महोदय द्वारा दीप प्रज्ज्वलित किया गया।



गृह मंत्री का संदेश पढ़ते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासक।



समारोह में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



महालेखाकार महोदय संबोधित करते हुए।



समारोह में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



कार्यालय की महिला कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना।



टंकण प्रतियोगिता के प्रतिभागी।



वर्णानुक्रम एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन।



वर्णानुक्रम एवं मसौदा लेखन के प्रतिभागी।



शब्द-सामर्थ्य एवं अनुवाद प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अहिंदी भाषी क्षेत्रों से संबंधित कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



शब्द-सामर्थ्य एवं अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन।



कार्टून के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रतियोगिता का आयोजन।



कार्टून प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागी।



पुस्तक प्रदर्शनी।



महालेखाकार (लेखा एवं हक0) तथा महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड संयुक्त रूप से हिमज्योति पत्रिका के चतुर्थ अंक का विमोचन करते हुए।



कार्यालय की महिला कर्मचारियों द्वारा भजन प्रस्तुति।



समारोह का आनंद उठाते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड वर्णानुक्रम प्रतियोगिता के प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए।



महालेखाकार (लेखा एवं हक0) उत्तराखण्ड टंकण प्रतियोगिता के प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए।



उप महालेखाकार (निधि) त्वरित अभिव्यक्ति के प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए।



महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड संबोधित करते हुए।

एक कदम स्वच्छता की ओर 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ किया गया



स्वच्छता दिवस के अवसर पर एकत्र अधिकारी एवं कर्मचारीगण स्वच्छ भारत की शपथ लेते हुए।



कार्यालय परिसर की साफ-सफाई करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



कार्यालय परिसर की साफ-सफाई करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



कार्यालय परिसर की साफ-सफाई करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग कार्यालय-सह-आवासीय परिसर में नवनिर्मित अतिथि-गृह (ऑफिसर्स मैस) के उद्घाटन समारोह की झलकियाँ।



भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग कार्यालय-सह-आवासीय परिसर में नवनिर्मित अतिथि-गृह (ऑफिसर्स मैस)।



महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा महालेखाकार (लेखा एवं हक0) उत्तराखण्ड संयुक्त रूप से अतिथि गृह (ऑफिसर्स मैस) का उद्घाटन करते हुए।



नवनिर्मित अतिथि-गृह (ऑफिसर्स मैस) के उद्घाटन समारोह के अवसर पर उपस्थित अधिकारी।



भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग कार्यालय-सह-आवासीय परिसर में नवनिर्मित अतिथि-गृह (ऑफिसर्स मैस) के उद्घाटन समारोह के अवसर पर अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



महालेखाकार महोदय द्वारा गणतंत्र दिवस-2015 के अवसर पर वरिष्ठ लेखाधिकारी को उत्कृष्ट कार्य निष्पादित करने हेतु पुरस्कृत किया गया।



गणतंत्र दिवस-2015 के अवसर पर वर्ष के दौरान किये गये उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु पुरस्कृत अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

कवि सम्मेलन



दिनांक 16 मार्च 2015 को आयोजित कवि सम्मेलन के अवसर पर श्री सुशील देवली, सहाय लेखाधिकारी द्वारा मंच का संचालन एवं कविता पाठ किया गया।



कविता पाठ करती हुई श्रीमती दीपा पंवार, क० हिंदी अनुवादक



कविताओं का रसास्वादन करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



महालेखाकार महोदय कवि सम्मेलन के प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हुए।



भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के कार्यालय सह-आवासीय परिसर में स्थित बहुउद्देशीय कक्ष में आयोजित योग शिविर



फेडरेशन ब्यूरो ऑफ सुप्रीम ऑडिट, इराक गणतन्त्र का उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल दिनांक 25.04.2015 को विशेष हकदारी, सामान्य भविष्य निधि तथा पेंशन से संबंधित विषयों की जानकारी लेते हुए।



स्वतंत्रता दिवस-2015 के अवसर पर महालेखाकार महोदय राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के छायाचित्र पर माल्यार्पण करते हुए।



स्वतंत्रता दिवस-2015 के अवसर पर महालेखाकार महोदय ध्वजारोहण करते हुए



भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग कार्यालय-सह-आवासीय परिसर में महालेखाकार (लेखा एवं हक0) तथा महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड पौधारोपण करते हुए।





वरि० उप महालेखाकार/प्रशा० पौधारोपण करते हुए।



उप महालेखाकार/निधि पौधारोपण करते हुए।



उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पौधारोपण करते हुए।



सहायक महालेखाकार पौधारोपण करते हुए।



सचिव, महालेखाकार (लेखा एवं हक०) उत्तराखण्ड
पौधा रोपणोपरान्त सींचते हुए।



वरिष्ठ लेखाधिकारी पौधारोपण करते हुए।



परिसर की महिलाएं पौधारोपण करती हुई।



महालेखाकार (लेखा एवं हक0) तथा महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड अन्य अधिकारियों संग भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग कार्यालय-सह-आवासीय परिसर का मुआयना करते हुए।



अतिथि-गृह (ऑफिसर्स मैस)।



टाईप- III क्वार्टर्स



हरा भरा खूबसूरत लॉन



निर्माणाधीन कार्यालय भवन, कौलागढ़।

